उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विज्ञापन हेतु सूचीबद्ध समाचार पत्र

www.tvindialive.in

टी.आई.एल. एक्सप्रेस

हिन्दी साप्ताहिक

वर्ष–18
अंक–02
पृष्ठ–12
मूल्य दो रूपया
बांदा, रविवार 22 नवम्बर, 2026
RNI No.: UPHIN2008/32664

बिहार में पीएम मोदी ने 6 लेन के 'नीतीश सेतु' का किया उद्घाटन



वैशाली, एजेंसी। बिहार के बुनियादी ढांचे को नई रफ्तार देने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राज्य के दौरे पर पहुंचे, जहां उन्होंने करीब 34,470 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन, लोकार्पण और शिलान्यास किया। इस दौरे की सबसे बड़ी सौगात वैशाली जिले में कच्ची दरगाह और बिदुपुर के बीच बना 9.76 किलोमीटर लंबा छह लेन का 'नीतीश सेतु' रहा, जिसका प्रधानमंत्री ने विधिवत उद्घाटन किया। हालांकि, पटना एयरपोर्ट पर प्रधानमंत्री का गर्मजोशी से स्वागत करने वाले पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार वैशाली में आयोजित मुख्य कार्यक्रम के दौरान मंच पर मौजूद नहीं रहे, जिसे लेकर अब सियासी गलियारों में नई चर्चाएं शुरू हो गई हैं। बिहार आगमन पर सबसे पहले पटना एयरपोर्ट पर पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगवानी की और उनका आत्मीय स्वागत किया। इस मुलाकात के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर तस्वीर साझा करते हुए लिखा कि पटना एयरपोर्ट पर नीतीश कुमार जी से मिलकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। इसके बाद पीएम मोदी वैशाली पहुंचे, जहां उन्होंने बिदुपुर ब्लॉक को पटना के बाहरी इलाके कच्ची दरगाह से जोड़ने वाले इस महत्वपूर्ण पुल का लोकार्पण किया। पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के सम्मान में इस पुल का नाम नीतीश सेतु रखा गया है। वैशाली में आयोजित इस समारोह के दौरान बिहार के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल सैयद अता हसनैन (सेवानिवृत्त), मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान सहित कई वरिष्ठ नेता मौजूद रहे। एक तरफ जहां बिहार को इस विशाल सेतु की सौगात मिली, वहीं दूसरी तरफ पुल का नाम नीतीश कुमार के नाम पर रखे जाने को लेकर राज्य की राजनीति गरमा गई है। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने इस फैसले पर कड़ा सवाल उठाते हुए कहा कि कच्ची दरगाह–बिदुपुर पुल का नाम दसवें सिख गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के बजाय नीतीश कुमार के नाम पर रखे जाने से सिख समुदाय की भावनाएं आहत होती हैं। इसके साथ ही खेड़ा ने यह भी सवाल दागा कि क्या भारतीय जनता पार्टी नीतीश कुमार को राजनीतिक मुख्यधारा से दूर करने की कोशिश कर रही है।

150 से अधिक अधिकारियों को मिलेगा प्रमोशन, तीन आईएएस बनेंगे प्रमुख सचिव



भोपाल, एजेंसी। मध्यप्रदेश सरकार राज्य में 150 से अधिक प्रशासनिक और राज्य प्रशासनिक सेवा (एसएएस) के अधिकारियों की पदोन्नति की प्रक्रिया शुरू करने की पूरी तैयारी में है। इसके लिए शासन में अगले महीने यानी दिसंबर के प्रथम पखवाड़े में विभागीय पदोन्नति समिति (डीपीसी) की बैठकें आयोजित की जाएंगी। प्रक्रिया पूरी होने के बाद राज्य सरकार आगामी 31 दिसंबर को अधिकारियों की पदोन्नति के आधिकारिक आदेश जारी करेगी।

वर्ष 2003 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी संजय गोयल, निशांत वरवड़े और ज्ञानेश्वर बी पाटिल को पदोन्नति देकर प्रमुख सचिव के पद पर तैनात किया जाएगा। इसके साथ ही 2011 बैच के 22 आईएएस अधिकारियों को पदोन्नत कर अपर सचिव से सचिव पद की जिम्मेदारी दी जाएगी। सचिव पद पर पदोन्नत होने वाले अधिकारियों की सूची में वीएस चौधरी कोलसानी, हरजिंदर सिंह, रुचिका चौहान, सौरभ कुमार सुमन, नेहा मारव्या, विजय कुमार जे, अनुराधा पी, विजय दत्ता, मोहित बुंदा, संजीव श्रीवास्तव, चंद्रमौलि शुक्ला, मनोज पुष्प, उमाशंकर भार्गव, गौतम सिंह, प्रीति जैन, ऊषा परमार, सरिता ओम बाला प्रजापति, मुजीबुर रहमान, दिनेश जैन, गिरीश शर्मा, शिवराज सिंह वर्मा और वीरेंद्र कुमार के नाम शामिल हैं।

40 लाख की जमीन ठगी में आरोपी गिरफ्तार

अंबाला, एजेंसी। जमीन की खरीद–फरोख्त में करीब 40 लाख रुपये की धोखाधड़ी करने के मामले में आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से दो असल रजिस्ट्रियां भी बरामद की हैं। गिरफ्तारी के बाद आरोपी को अदालत में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।आर्थिक अपराध शाखा के जांच अधिकारी सहायक उप निरीक्षक प्रदीप कुमार ने बताया कि कक्कड़ माजरा गांव निवासी बलराम ने 20 जून को थाना शहजादपुर में धोखाधड़ी की शिकायत दी थी। शिकायत के अनुसार, 16 दिसंबर 2025 को जमीन के सौदे के दौरान आरोपी संदीप व अन्य लोगों ने बलराम के साथ करीब 40 लाख रुपये की ठगी की।

जिंदा जला शख्स, अस्पताल में तोड़ा दम

चंडीगढ, एजेंसी। पंचकूला शहर के सेक्टर–24 स्थित मल्टी फीचर पार्क के सामने सर्विस रोड पर एक कार अचानक आग का गोला बन गई। देखते ही देखते आग ने पूरी कार को अपनी चपेट में ले लिया। हादसे में कार सवार एक व्यक्ति गंभीर रूप से झुलस गया। उसे तुरंत उपचार के लिए सेक्टर–26 स्थित एक निजी अस्पताल में पहुंचाया गया, जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। फिलहाल मृतक की पहचान नहीं हो पाई है। शनिवार शाम कार सेक्टर–24 मल्टी फीचर पार्क के सामने सर्विस रोड पर मौजूद थी। इसी दौरान अचानक कार में आग लग गई। आग इतनी तेजी से फैली कि कार सवार को संभलने का मौका नहीं मिला।

एयर कार्गो कॉम्प्लेक्स में पकड़ी गयी 5 करोड़ रुपये की कोकीन

नयी दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली सीमा शुल्क विभाग के अधिकारियों ने नई दिल्ली के एयर कार्गो कॉम्प्लेक्स के जरिए कोकीन की तस्करी करने की कोशिश को नाकाम करते हुए 5 करोड़ रुपये की कोकीन पकड़ी है। तस्करी का यह माल एयर कार्गो परिसर के आयातित माल क्षेत्र में पकड़ा गया। यह कार्रवाई डेटा विश्लेषण और खुफिया जानकारी के आधार पर की गयी। आधिकारिक जानकारी के अनुसार कोकीन की यह खेप युगांडा के एंटेबे से बीन्स क्लॉथ्स (कपड़े) के रूप में भेजी गयी थी और नयी दिल्ली पहुंचने के बाद काफी समय तक बिना किसी दावे के पड़ी रही।

हरिद्वार के श्मशान घाट पर पंचतत्व में विलीन हुई सीएम योगी की मां



हरिद्वार, एजेंसी। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मां सावित्री देवी का अंतिम संस्कार हरिद्वार के चंडीघाट श्मशान पर संपन्न हो गया। करीब 12.30 बजे उनके पार्थिव शरीर को चार पुत्रों में सबसे छोटे महेंद्र सिंह बिष्ट ने मुखाग्नि दी।

इससे पहले अंतिम यात्रा पैतृक गांव पंचूर से सुबह 8.50 बजे शुरू होकर हरिद्वार चंडी घाट श्मशान के लिए निकली। इस दौरान बड़ी संख्या में गांव के लोग, स्थानीय और प्रदेश के नेता शामिल रहे।

अंतिम यात्रा 11.40 बजे श्मशान घाट पर पहुंची। इस दौरान बड़ी संख्या में उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड के नेताओं और साधु–संतों का भारी जमावड़ा देखने को मिला। इस दौरान पार्थिव शरीर को श्रद्धांजलि देने के लिए रखा गया है। इस समय नेताओं और साधु–संतों द्वारा सावित्री देवी को श्रद्धांजलि देने का सिलसिला जारी है। उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री संजय निषाद भी इस दौरान गांव से ही अंतिम यात्रा में शामिल रहे। सीएम योगी मां को कंधा देते हुए भावुक नजर आए। बता दें कि पौड़ी गढ़वाल जिला स्थित योगी जी के पैतृक गांव पंचूर से हरिद्वार पहुंचने में करीब दो से ढाई घंटे का समय लगता है।



मेडिकल कॉलेज में मरीज की मौत पर हंगामा



टी0आई0एल0 संवाददाता

बांदा। रानी दुर्गावती मेडिकल कॉलेज में मरीज की मौत पर परिजन ने हंगामा किया।

उन्होंने इलाज में लापरवाही बरतने और 20 हजार रुपये मांगने का आरोप लगाकर डॉक्टर व स्टाफ नर्स के खिलाफ तहरीर दी है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। कालिंजर थाना क्षेत्र के कटरा कालिंजर गांव निवासी अभय ने बताया कि चाचा हरिप्रसाद (45) को लिवर और बवासीर की वजह से खून आने की शिकायत थी। उन्हें रात करीब साढ़े आठ बजे मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया।

ड्यूटी पर तैनात स्टाफ नर्स पंकज व रामबिहारी, जूनियर डॉक्टर सत्यवीर और डॉ. करन राजपूत ने इलाज शुरू किया। घरवालों को डॉक्टरों ने बताया कि मरीज के शरीर में खून की काफी कमी है। खून की व्यवस्था और 20 हजार रुपये जमा कराने होंगे।

अभय का आरोप है कि वह खून और रुपये की व्यवस्था करके रात करीब एक बजे लौटे। नर्सिंग स्टाफ ने बताया कि अब सुबह ही इलाज हो सकेगा। इसके बाद सुबह करीब साढ़े पांच बजे चाचा की मौत हो गई। उन्होंने मेडिकल कॉलेज के प्रधानाचार्य को फोन किया था। उन्होंने आने की बात कही, लेकिन सुबह तक नहीं आए। वहीं हरिप्रसाद का उपचार करने वाले डॉ. करन राजपूत ने बताया कि मरीज को बवासीर और लिवर में खराबी थी। उनके शरीर में महज दो ग्राम खून था।

परिजन से खून की व्यवस्था करने को कहा गया था। वे रात में खून लेकर आए थे, लेकिन मरीज की हालत ठीक नहीं होने के कारण सुबह खून चढ़ाने की बात कही गई। रुपये मांगने का आरोप गलत है। शहर कोतवाली इंस्पेक्टर प्रताप सिंह ने बताया कि परिजन की ओर से तहरीर मिली है। उसमें लगाए गए आरोपों की जांच कराई जा रही है।

मुख्यमंत्री से नंदवारा कांड की सीबीआई जांच की मांग

टी0आई0एल0 संवाददाता

बांदा। नरैनी कोतवाली क्षेत्र के गांव नंदवारा में हुई दो सगे मासूम भाइयों की हत्या का मामला फिर से प्रकाश में आया है।

हत्या के आरोप में जेल में निरुद्ध बसपा के पूर्व मंत्री सुरेंद्र पाल वर्मा के पुत्र पूर्व जिला पंचायत सदस्य महेंद्र पाल वर्मा की पुत्रवधू कोमल सिंह ने कलक्ट्रेट में प्रदर्शन किया। इस दौरान उन्होंने मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपकर सीबीआई जांच की मांग की।



नंदवारा निवासी कोमल सिंह के साथ शुक्रवार को गांव के लोग कलक्ट्रेट पहुंचे। यहां कोमल सिंह ने मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपा। ज्ञापन में 51 ग्रामीणों के हलफनामे भी शपथपत्र के साथ प्रस्तुत किए गए। ज्ञापन में कोमल ने कहा कि उनके बाबा ससुर डॉ. सुरेंद्र पाल वर्मा नरैनी विधानसभा क्षेत्र से पांच बार विधायक व दो बार मंत्री रहे हैं। उनके ससुर लोधी महेंद्र पाल वर्मा जिला पंचायत सदस्य रह चुके हैं व मध्य प्रदेश की पन्ना विधानसभा सीट से वर्ष 2013 में बसपा से व वर्ष 2018 में जन अधिकारी पार्टी से और वर्ष 2022 में सपा के टिकट पर चुनाव लड़ चुके हैं।

उनके ससुर एक राजनीतिक व्यक्ति हैं। ससुर ने वर्ष 2027 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में बांदा सदर सीट से सपा से टिकट की दावेदारी की थी। उनका पुत्र वर्तमान में ग्राम पंचायत नंदवारा का प्रधान है। उनके ससुर को राजनीतिक षड्यंत्र के चलते झूठा मुकदमा लिखाकर फंसाया गया है। घटना के समय उनके ससुर अपने बांदा स्थित मकान में थे। घटना की जानकारी होने पर उन्होंने कांड की सीबीआई जांच की मांग की थी।

इस पर विरोधियों ने पुलिस से मिलकर उन्हें 25 अक्तूबर को आवास से गिरफ्तार करा दिया। उनका और वादी मुकदमा व उनके सहयोगियों का नार्को टेस्ट भी नहीं कराया गया। कहा कि कॉल डिटेल, वॉइस कॉल की रिकॉर्डिंग की सीडी भी नहीं बनाई गई। बहू ने अपने ससुर को इस कांड में बेकसूर बताया है। बहू ने मुख्यमंत्री से सीबीआई जांच की मांग की है।

पानी की जांच करेंगी 4,069 महिलाएं



टी0आई0एल0 संवाददाता

चित्रकूट। अब गांव के पानी की गुणवत्ता की जांच की जिम्मेदारी महिलाओं के हाथ में होगी। जल जीवन मिशन के तहत जिले की 4,069 महिलाओं को फील्ड टेस्ट किट (एफटीके) से पानी की जांच के लिए चुना गया है। ये महिलाएं अपने गांव में पानी के नमूनों की प्रारंभिक जांच करेंगी और लोगों को शुद्ध पेयजल के प्रति जागरूक करेंगी। उत्तर प्रदेश जल निगम (ग्रामीण) के अधिशासी अभियंता अनिल कुमार ने बताया कि एफटीके से मिला परिणाम प्रारंभिक संकेत होता है।अगर किसी नमूने में गड़बड़ी मिलती है तो उसकी प्रयोगशाला में पुष्टि कराकर सुधारात्मक कार्रवाई की जाएगी।

जिले में नल कनेक्शन का काम भी लगभग पूरा हो चुका है। 561 गांवों में 1,63,970 परिवारों के लक्ष्य के सापेक्ष 1,63,698 परिवारों को घरेलू नल कनेक्शन मिल चुका है।

तालाब में उतराता मिला ई रिक्शा चालक का शव



टी0आई0एल0 संवाददाता

हमीरपुर। पांच दिन से लापता ई रिक्शा चालक का सुबह कस्बे के बिरखुरा तालाब में शव उतराता मिला। शराब के नशे में तालाब में डूबने से मौत की आशंका जताई जा रही है। पांच दिन पहले तालाब किनारे झाड़ियों में उसका रिक्शा मिला था।

कस्बे के कैलाश पटेल मोहल्ला निवासी अनिल कुमार ने बताया कि उनके बड़े भाई विपिन अहिरवार (25) ई रिक्शा चलाकर परिवार का भरण पोषण करते थे। 16 नवंबर को रिक्शा लेकर घर से निकले भाई वापस घर नहीं पहुंचे। शाम को भाई का फोन आया कि वह बिरखुरा तालाब के पास हैं उन्हें आकर ले जाओ। बताया कि जब वह तालाब पर पहुंचे तो तालाब किनारे झाड़ियों के बीच ई रिक्शा खड़ा मिला। जबकि भाई का कोई पता नहीं चला। 17 नवंबर को उन्होंने जरिया थाने में गुमसुदगी दर्ज कराई थी। बताया कि शुक्रवार सुबह बिरखुरा तालाब में भाई का शव उतराता मिला। बताया कि भाई शराब का लती था। आशंका जताई कि शराब के नशे में तालाब में गिरने से भाई की मौत हुई है। रिक्शा चालक की मौत पर मां ममता, पत्नी खुशबू, बेटे रियांश व आर्यांश का रो रोकर बुरा हाल है।

जवाबी कीर्तन सुन मंत्रमुग्ध हुए श्रोता, जुटी रही भीड़

महोबा। ब्लॉक चरखारी के गुढ़ा गांव में देवात्थान एकादशी पर चल रहे मेले में रात जवाबी कीर्तन का आयोजन हुआ। इस दौरान कीर्तन कलाकारों ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियां दी, जिसे सुनकर श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए। जवाबी कीर्तन कार्यक्रम में श्रोताओं की भारी भीड़ जुटी।कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि सुप्रीम कोर्ट की अधिवक्ता सीमा पटनाहा सिंह व विशिष्ट अतिथि बुंदेलखंड कीर्तन उत्थान समिति के अध्यक्ष देवेंद्र तिवारी ने दीप जलाकर किया।

कीर्तन कलाकार इंद्रेश पदम और नीलम विश्वकर्मा के बीच जोरदार मुकाबला हुआ। इंद्रेश पदम की प्रस्तुति नीचे चक्रधर जी, ऊपर चक्रधर जी बीच में बन गए गिरधारी जमकर सराही गई।

महिलाकर्मी ने बिजली विभाग के अफसर को जड़े पांच थप्पड़

टी0आई0एल0 संवाददाता

हमीरपुर। बिजली विभाग के मुख्यालय में तैनात एक महिला कर्मी ने छेड़खानी का आरोप लगाते हुए तैनात एक्सईएन को एक के बाद एक पांच थप्पड़ जड़े। आरोप है कि एक्सईएन महिला को जबरन केबिन में बुलाकर छेड़खानी करते थे। महिला ने पुलिस से शिकायत की है। वहीं महिला का थप्पड़ मारते हुए वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। मामले में विभागीय कार्रवाई के लिए उच्चाधिकारियों को रिपोर्ट बनाकर भेजी गई है। यूपी के हमीरपुर स्थित बिजली विभाग के कार्यालय में तैनात महिला कर्मचारी का आरोप है कि संबंधित एक्सईएन उसे बार–बार फोन कर अपने केबिन में बुलाते थे। इस दौरान वह उसका हाथ पकड़ते और अश्लील बातें करते थे। महिला के मुताबिक, अधिकारी हाथ की रेखाओं का हवाला देकर आपत्तिजनक टिप्पणियां भी करते थे। इतना ही नहीं, उस पर घर आकर चाय पीने का दबाव भी बना रहे थे। तंग आकर महिला कर्मचारी कार्यालय पहुंची और इसी बात को लेकर एक्सईएन से उसकी कहासुनी हो गई। विवाद इतना बढ़ा कि महिला ने अधिकारी पर थप्पड़ों की बरसात कर दी। मौके पर मौजूद कर्मचारियों ने किसी तरह बीच–बचाव कर महिला को शांत कराया और वहां से बाहर ले गए।

मौत के फंदे से जिंदगी खींच लाई पुलिस

टी0आई0एल0 संवाददाता

उरई। पति से विवाद के बाद कमरे में बंद होकर फंदा लगाने जा रही विवाहिता की एट पुलिस ने समय रहते जान बचा ली। यूपी–112 पर सूचना मिलने के बाद पहुंची पुलिस ने कमरे का दरवाजा तोड़कर महिला को फंदे से नीचे उतारा। पुलिस की तत्परता से एक जिंदगी बच गई।

घटना दोपहर कस्बे के बजरंग मोहल्ले की है। यूपी–112 की पीआरवी 9690 को सूचना मिली कि एक महिला कमरे में बंद होकर आत्महत्या करने की कोशिश कर रही है। सूचना मिलते ही थानाध्यक्ष शिवशंकर सिंह पुलिस टीम और पीआरवी कर्मियों के साथ मौके पर पहुंचे। कमरे का दरवाजा अंदर से बंद था। अनहोनी की आशंका को देखते हुए पुलिसकर्मियों ने दरवाजा तोड़ दिया।

DOLBY INFOTAINMENT
Where Brands become Legends
Cricket Advertising
TV & Radio Advertising
Multiplex Advertising
Outdoor Advertising
Social Media Advertising
Transit Media Advertising
INDIA'S LEADING ADVERTISING AGENCY
Call us: 0522-4010 844 | 7985907267 | 8318924761
Website: dolbyinfotainment.com | Email: dolbyinfotainment@gmail.com

उच्चतम न्यायालय के जज ने शक्तिपीठ मां विशालाक्षी के दरबार में लगाई हाजिरी



टी0आई0एल0 संवाददाता

वाराणसी। भारत के उच्चतम न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) के न्यायमूर्ति अरविंद कुमार ने उत्तर प्रदेश की धार्मिक नगरी वाराणसी के मीरघाट स्थित शक्तिपीठ माता विशालाक्षी के दरबार में परिवार के साथ हाजिरी लगाई। 51 शक्तिपीठ में शामिल जागृत विशालाक्षी माता के मन्दिर में शीश नवाकर न्यायमूर्ति ने मंगल कामना की। इस अवसर पर मंदिर के महंत पं सुरेश कुमार तिवारी ने षोडशोपचार विधि से उनके हाथों माता की पूजन कराया। न्यायमूर्ति ने सपत्नीक मां की आरती उतारकर दंडवत प्रणाम कर कुशल–मंगल की प्रार्थना की। पूजन के बाद महंत पं सुरेश तिवारी ने उन्हें अंग वस्त्रम व उनकी पत्नी को साड़ी और प्रसाद देकर आंचल भरकर आशीर्वाद दिया। यहां से न्यायमूर्ति ने त्रिपुरा भैरवी स्थित मां वाराही देवी मंदिर में भी दर्शन–पूजन किया। इसके बाद वह गन्तव्य की ओर रवाना हो गए। दर्शन पूजन के दौरान सुरक्षा की व्यापक व्यवस्था रही।

पंचायत भवन के पास पेड़ से लटका मिला श्रमिक का शव

टी0आई0एल0 संवाददाता

रायबरेली। घर से रात में निकले श्रमिक का शव गांव के पंचायत भवन के पास पेड़ से लटका मिला। लापता यशकरन सिंह (45) की मौत की खबर मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया। मौके पर ग्रामीणों की भीड़ जुट गई।बरौला गांव निवासी यशकरन परिवार के साथ शिवपुर हुसैनाबाद में किराए के मकान में रहते थे। खीरों स्थित ईंट भट्ठे पर पथाई कर परिवार का भरण–पोषण करते थे। रात करीब 11 बजे वह किसी काम से घर से निकले थे। इसके बाद वापस नहीं लौटे। पत्नी ममता सिंह और बेटे मयंक ने समझा कि वह भट्ठे पर काम करने गए हैं। सुबह उनका शव पंचायत भवन के पास जामुन के पेड़ से रस्सी के सहारे लटका मिला।

गुरु नानक देव के प्रकाश पर्व पर निकली प्रभात फेरी

टी0आई0एल0 संवाददाता

फतेहपुर। सिख धर्म के प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी के 557वें प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में गुरुद्वारा गुरु सिंह सभा की ओर से प्रभात फेरी निकाली गई। गुरुद्वारा साहिब से शुरू हुई प्रभात फेरी साईं मंदिर और वर्मा चौराहा होते हुए वापस गुरुद्वारा पहुंचकर संपन्न हुई।प्रभात फेरी के दौरान संगत ने शबद–कीर्तन के माध्यम से गुरु की महिमा का गुणगान किया। प्रबंधक कमेटी की अगुवाई में निकली प्रभात फेरी में श्रद्धालुओं का उत्साह देखते ही बना। कमेटी के पदाधिकारियों ने बताया कि गुरु नानक देव जी का 557वां प्रकाश पर्व 24 नवंबर को गुरुद्वारा गुरु सिंह सभा में श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाएगा।इसके लिए तैयारियां की जा रही हैं। इस मौके पर जतिंदर पाल सिंह, मंजीत सिंह, चरनजीत सिंह, ज्ञानी प्रीतम सिंह, परमजीत सिंह, हरजीत कौर, हरविंदर कौर, मंजीत कौर, ईशर कौर, सतबीर कौर, जसपाल कौर, खुशी, हरमीत कौर मौजूद रहे।

सड़कों पर खड़े भारी वाहन दे रहे हादसों को दावत

टी0आई0एल0 संवाददाता

अमेठी। सड़कों पर फर्राटा भरते वाहनों के बीच किनारे खड़े भारी वाहन हादसों को दावत दे रहे हैं। जिले के प्रमुख मार्गों, कस्बों और बाजारों में सड़क किनारे ट्रक, लोडर और दूसरे वाहन खड़े किए जा रहे हैं। इससे सड़क की चौड़ाई कम हो रही है और आवागमन प्रभावित हो रहा है। यातायात विभाग अभियान चलाकर कार्रवाई के दावे करता है, लेकिन अवैध पार्किंग पर अंकुश नहीं लग पा रहा है। दोपहर एक से दो बजे के बीच गौरीगंज के चार स्थानों की पड़ताल में यही तस्वीर सामने आई। दोपहर करीब एक बजे गौरीगंज–अमेठी मार्ग पर टिकरिया के पास सड़क किनारे वाहन खड़े



मिले। इससे रास्ता संकरा हो गया था। दोपहिया और चारपहिया वाहन चालकों को इनके बीच से निकलना पड़ रहा था। सामने से वाहन आने पर मुश्किल और बढ़ रही थी।टांडा–बांदा हाईवे पर बरनाटीकर के पास सवा एक बजे भारी वाहन सड़क किनारे खड़े थे। तेज रफ्तार वाहनों के बीच ट्रकों की मौजूदगी दुर्घटना का खतरा बढ़ा रही थी। आगे निकलने के लिए चालकों को अचानक ब्रेक लगाना पड़ रहा था।जामो मार्ग पर तहसील मोड़ के पास डेढ़ बजे सड़क किनारे खड़े वाहनों से आवागमन प्रभावित था। मोड़ पर वाहन खड़े होने से सामने से आने वाले वाहन दिखाई नहीं दे रहे थे। वहीं, सैठा मार्ग पर नवोदय विद्यालय के पास पौने दो बजे खड़े वाहनों के कारण विद्यार्थियों और अभिभावकों को परेशानी हो रही थी।

एक्सरे के नहीं इंतजाम, दांतों की नहीं हो पा रही जांच

टी0आई0एल0 संवाददाता

उन्नाव। जिला अस्पताल की डेंटल ओपीडी में हर दिन तकरीबन 60 से 70 मरीज दांत दर्द, सड़न, सूजन और मसूड़ों से जुड़ी समस्याओं का इलाज कराने आते हैं। इसके बावजूद अस्पताल में डेंटल एक्सरे (ओपीजी) की सुविधा उपलब्ध नहीं है। ऐसे में डॉक्टरों को दांतों की जड़ों, जबड़े की हड्डियों और अंदरूनी संक्रमण की स्थिति जानने में परेशानी होती है। मरीजों को जांच के लिए निजी क्लीनिकों का सहारा लेना पड़ता है। इससे इलाज में देरी होने के साथ ही उनकी जेब पर भी बोझ पड़ रहा है।

मिठाई, चॉकलेट, कोल्ड ड्रिंक और पैकेज्ड स्नैक्स के बढ़ते सेवन के साथ दांतों की नियमित सफाई और समय पर जांच नहीं कराने से मुंह संबंधी बीमारियां बढ़ रही हैं। दांतों में सड़न, दर्द, मसूड़ों से खून आना और सूजन जैसी शिकायतें लेकर बड़ी संख्या में मरीज अस्पताल आते हैं। बीमारी की गंभीरता और दांतों की अंदरूनी स्थिति का पता लगाने के लिए डॉक्टर ओपीजी एक्सरे कराने की सलाह देते हैं।



ओपीजी एक्सरे से दांतों की जड़ों में संक्रमण, छिपी सड़न, फोड़े, जबड़े की हड्डी को हुए नुकसान और दांतों की स्थिति का पता लगाने में मदद मिलती है। रूट कैनाल, दांत निकालने और मसूड़ों की गंभीर बीमारियों के इलाज में भी यह जांच उपयोगी होती है लेकिन जिला अस्पताल में यह सुविधा नहीं होने से मरीजों को बाहर जांच करानी पड़ती है। निजी क्लीनिकों में जांच और इलाज का खर्च अधिक होने के कारण कई मरीज एक्सरे कराने से बचते हैं।

इससे बीमारी की सही पहचान और उपचार प्रभावित होने का खतरा रहता है।

लुटेरी दुल्हन का खेल, चार विवाह छिपाकर की पांचवीं शादी

टी0आई0एल0 संवाददाता

कानपुर। एक युवती पर पांच शादियां करने का आरोप लगा है। पांचवें पति विशाल विश्वकर्मा का दावा है कि शादी के एक साल बाद 18 जून को पत्नी घर से एक लाख रुपये और 15 लाख रुपये के जेवर लेकर मायके चली गई। 13 अगस्त को ससुराल पहुंचा, तो उन लोगों ने पीटा और 20 लाख रुपये रंगदारी मांगी। इसके बाद पुलिस को तहरीर दी थी।

पुलिस ने तीन माह बाद अब पत्नी समेत आठ लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। विश्व बैंक कॉलोनी निवासी विशाल विश्वकर्मा बीमा का काम करते हैं। उन्होंने दर्ज प्राथमिकी में बताया कि 18 मई 2025 को उनकी शादी जूही लाल कॉलोनी निवासी प्रगति विश्वकर्मा से हुई थी। शादी के करीब एक साल बाद 18 जून 2026 को प्रगति घर से 15 लाख रुपये के गहने और एक लाख रुपये लेकर मायके चली गई।

छानबीन करने पर पूर्व की दो शादियों के प्रमाण मिले। 13 अगस्त 2026 को वह छोटे भाई के साथ प्रगति के मायके पहुंचा और पूर्व की शादियों के बारे में कहा। इस पर ससुर अशोक, सास सोमवती, सीमा, शरद सैनी, कोमल, ललिता शर्मा और मौसी गोमती ने उन्हें पीटा। इन लोगों ने 20 लाख रुपये रंगदारी मांगी। किसी तरह वहां से बचकर घर पहुंचा और पुलिस को तहरीर दी। पत्नी का गर्भपात कराने का भी आरोप लगाया है। बर्रा थाना प्रभारी क्षितिज सिंह ने बताया कि जांच के बाद विशाल की तहरीर पर पत्नी प्रगति विश्वकर्मा, उसके पिता अशोक कुमार, सोमवती, शरद सैनी, कोमल, सीमा, ललिता और गोमती के खिलाफ धोखाधड़ी, आपराधिक साजिश, दूसरी शादी छिपाना, बलवा, मारपीट, गालीगलौज, धमकी और रंगदारी मांगने समेत अन्य धाराओं में प्राथमिकी दर्ज कर विवेचना की जा रही है।

Call:0522-6537101, 9839919728
e-mail:info@tvindialive.com
tvindialive.til@gmail.com
web:www.tvindialive.in
www.tvindialive.com
www.tilexpress.in
TIL Express
WEEKLY HINDI NEWSPAPER
Contact for: News Bureau,
News Reporter & Marketing Agency
Off: Sector C-1, C-25, LDA Colony, Kanpur Road , Lucknow. 226012 (U.P.)

सम्पादकीय

संवैधानिक वादे को पूरा करने की चुनौती

शिक्षा, विशेषकर उच्च शिक्षा का बुनियादी उद्देश्य व्यक्ति में स्वतंत्र और आलोचनात्मक चिंतन विकसित करना है। अपेक्षा की जाती है कि शिक्षा व्यक्ति को जन्म से निर्धारित सामाजिक पदानुक्रमों और पूर्वाग्रहों से मुक्त करे, लेकिन विडंबना यह है कि हमारे शिक्षण संस्थान आज भी उन्हीं पदानुक्रमों को नए रूपों में पुनरुत्पादित कर रहे हैं। विश्वविद्यालय विवेक, तर्क और संवाद के केंद्र होने चाहिए, लेकिन वहां जो कुछ घटित हो रहा है, वह कई बार पूर्वाग्रहों को और मजबूत करता दिखाई देता है। हमें यह पूछना होगा कि संवैधानिक गारंटियों, आरक्षण और शिक्षा के विस्तार के बावजूद जाति गरिमा के अनुभव को किस तरह प्रभावित करती है? शायद इस प्रश्न को समझने में साहित्य हमारी मदद कर सकता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा श्जूठनश इसका एक मार्मिक उदाहरण है कि शिक्षा सामाजिक मुक्ति का रास्ता तो है, लेकिन उस रास्ते पर जातिगत अपमान और भेदभाव भी साथ चलते हैं। बामा की श्करुक्कुश भी इस धारणा को चुनौती देती है कि शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता अपने आप जाति को समाप्त कर देते हैं। समानता की भाषा के नीचे भी जाति रिश्तों और संस्थागत व्यवहारों में जीवित रह सकती है।

किसी एससी–एसटी विद्यार्थी के लिए विश्वविद्यालय में प्रवेश केवल एक व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं होता। उसमें उन पीढ़ियों की आकांक्षाएं शामिल होती हैं, जिन्हें ज्ञान और शिक्षा के अवसरों से वंचित रखा गया। अक्सर योग्यता को इस तरह प्रस्तुत किया जाता है, मानो उसका सामाजिक परिस्थितियों से कोई संबंध ही न हो, जबकि सच यह है कि योग्यता के विकास के लिए बेहतर स्कूल, किताबें, कोचिंग, कंप्यूटर, अनुकूल पारिवारिक वातावरण और सामाजिक संपर्कों की भूमिका होती है। जिन परिस्थितियों में योग्यता विकसित और प्रदर्शित होती है, उनकी असमानता को नजरअंदाज करके हम मेरिट का निष्पक्ष मूल्यांकन कैसे कर सकते हैं? दया पवार की श्बलुतंश उन सामाजिक व्यवस्थाओं को उजागर करती है, जिनके माध्यम से जाति मनुष्य की गरिमा और उसकी निर्भरता को नियंत्रित करती है। शरणकुमार लिंबाले की श्अक्करमाशीश उस पीड़ा को सामने लाती है, जिसमें व्यक्ति को यह महसूस कराया जाता है कि उसका अपना अस्तित्व ही जैसे किसी वैधता का अधिकारी नहीं है। प्रेमचंद की श्सद्गतिश भी हमें उन सवालों से रूबरू कराती है, जिन्हें आधुनिक भारत शायद अब अतीत मानकर भूल जाना चाहता है। गिरिराज किशोर का उपन्यास श्परिशिष्टश ऐसे ही सवालों को देश के प्रतिष्ठित तकनीकी शिक्षण संस्थानों के भीतर ले जाता है। यह दिखाता है कि आधुनिकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मेरिटोक्रेसी की शब्दावली के पीछे जातिगत पूर्वाग्रह किस तरह मौजूद रह सकते हैं।

समकालीन आंकड़े इन साहित्यिक अनुभवों को केवल अतीत या कल्पना का विषय मानकर खारिज करने की गुंजाइश नहीं छोड़ते। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 704 विश्वविद्यालयों और 1,553 कालेजों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर संसदीय समिति को दी गई जानकारी के अनुसार उच्च शिक्षण संस्थानों में जातिगत भेदभाव की शिकायतें 2019–20 में 173 थीं, जो 2023–24 में बढ़कर 378 हो गईं। इन आंकड़ों की सावधानीपूर्वक व्याख्या आवश्यक है। शिकायतों में वृद्धि घटनाएं बढ़ने, जागरूकता और शिकायत दर्ज कराने की प्रवृत्ति में सुधार अथवा इन सभी कारणों का परिणाम हो सकती है, पर आंकड़ों से आगे एक सवाल यह है कि शिकायत दर्ज होने के बाद होता क्या है? हैदराबाद विश्वविद्यालय के रोहित वेमुला की 2016 में हुई आत्महत्या और हाल में आइआइटी बांबे के साहिल वाकोडे की मौत ने जाति, वंचित समुदायों के विद्यार्थियों की असुरक्षा और संस्थागत प्रतिक्रिया के संबंध पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। इन घटनाओं की निष्पक्षता के साथ जांच होने के साथ ही यह भी पूछा जाए कि क्या हमारे संस्थान अपमान, अलगाव और बहिष्कार के उन रूपों को संबोधित करने में सक्षम हैं, जिनका सामना हाशिये से आने वाले विद्यार्थी करते हैं? किसी प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय की जिम्मेदारी इसलिए कम नहीं हो जाती कि भेदभाव स्वीकार करने से उसकी छवि प्रभावित हो सकती है। विश्वविद्यालय केवल प्रशिक्षण देने और डिग्रियां बांटने के स्थान नहीं हैं। वे नागरिकता के संस्कार विकसित करने वाली जगहें भी हैं। यहीं समानता और बंधुता या तो अनुभव की जाती हैं या उनसे वंचित किया जाता है। संविधान कानून के समक्ष समानता की गारंटी देता है, लेकिन संवैधानिक नैतिकता केवल संविधान के पन्नों तक सीमित नहीं रह सकती। उसे संस्थागत व्यवहार का हिस्सा बनना होगा। किसी विश्वविद्यालय की समानता के प्रति प्रतिबद्धता केवल प्रवेश और विविधता के आंकड़ों से नहीं, बल्कि इससे मापी जानी चाहिए कि वहां विद्यार्थी बिना अपमान और भय के असहमत, संवाद और आकांक्षा कर सकते हैं या नहीं? यदि आज भी जाति यह तय करती है कि कौन अपना है और किसे अपनी स्वीकार्यता के लिए लगातार संघर्ष करना होगा, तो यह समानता के संवैधानिक वादे के साथ हमारी सामूहिक विफलता है।

जनगणना में आमजन की भूमिका

अशोक त्रिपाठी



लोकतंत्र में सभी लोगों का विकास और महत्व की भावना छिपी है। समानता एक संकल्प है लेकिन व्यवहार में इसको लागू करना दुष्कर ही नहीं असंभव है। प्रकृति की रचना भी शायद यही संदेश देती है। हम इंसानों के साथ भी बराबरी की भावना तो रहती है लेकिन हालात सभी के अलग–अलग होते हैं। लोकतांत्रिक समाज में विकास को सभी लोगों तक पहुंचाने के लिए आंकड़े इसीलिए जुटाए जाते हैं ताकि सभी को लगभग एक जैसी सुविधा और जीवन स्तर मिल सके। जनगणना इसी प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है। इससे पता चलता है कि शिक्षा, मकान, भोजन और आर्थिक समृद्धता की कहां विशेष जरूरत है। हमारे देश में जनगणना को काफी अर्सा हो चुका है और इसको लेकर राजनीति भी होने लगी थी। नरेन्द्र मोदी सरकार ने सभी राज्यों में 2027 को जनगणना वर्ष घोषित किया और नवम्बर 2026 से ही इसका प्रारम्भ हो गया है। देश में डिजिटल प्रगति को देखते हुए इस बार आनलाइन जनगणना का भी प्रावधान रखा गया है।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखपुर में गत दिनों स्वयं स्वगणना आनलाइन से सम्पन्न की है। स्वगणना के रूप में जनगणना का पहला चरण 16 नवम्बर से प्रारम्भ हो चुका है और यह क्रम 30 नवम्बर तक चलेगा। इसके बाद 1 दिसम्बर 2026 से 7 जनवरी 2027 तक जनगणना का दूसरा चरण सम्पन्न होगा। स्वगणना के लिए se.census.gov.in वेबसाइट पर जाना होगा। यहां अपने मोबाइल नम्बर से लागिंग करके परिवार के सभी सदस्यों की जानकारी भरी होगी। जानकारी भरने के बाद आपको P अक्षर से शुरू होने वाली 11 अंकों SE ID मिलेगी। इसे संभाल कर रखना होगा क्योंकि जनगणना कर्मचारी जब आपके घर आएंगे तो इसे बताना होगा। जनगणना कर्मचारी जब आपके घार आएं तो उनका परिचय पत्र जरूर देखें। इस प्रकार आप किसी प्रकार की ठगी का शिकार नहीं होंगे। जनगणना के नाम पर आप अपना ओटीपी पिन या पासवर्ड किसी को न बताएं। अपनी जानकारी केवल आधिकारिक माध्यमों से ही साझा करें। कुछ लोग कह सकते हैं कि आपकी निजी जानकारी का दुरुपयोग भी हो सकता है लेकिन यह सच नहीं है। आप जो भी जानकारी देंगे वह जनगणना अधिनियम 1948 के तहत गोपनीय रखी जाएगी। जनगणना सिर्फ आंकड़े जुटाने की प्रक्रिया नहीं है बल्कि देश के विकास की महत्वपूर्ण नींव है। इसलिए हम सभी को जागरूकता का परिचय देते हुए जनगणना प्रक्रिया में पूरा सहयोग करना चाहिए।

जनगणना 2027 के तहत प्रदेश में स्वगणना की प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ रही है। 16 नवंबर से शुरू हुई इस प्रक्रिया में 20 नवम्बर शाम तक 13,96,272 परिवारों ने अपनी जानकारी आनलाइन दर्ज की है। इनमें 5,57,265 परिवारों ने सभी जरूरी विवरण भरकर प्रक्रिया पूरी कर ली है और उन्हें विशेष पहचान नंबर भी मिल गया है। वहीं, 8,39,007 परिवारों ने जानकारी तो दर्ज की है, लेकिन अभी अंतिम रूप से सबमिट नहीं किया है।

प्रदेश में स्वगणना के लिए 30 नवंबर तक का समय निर्धारित किया गया है। इसके बाद एक दिसंबर से चार जनवरी तक जनगणना कर्मी घर–घर जाकर परिवारों से जानकारी जुटाएंगे। ऐसे में जिन परिवारों ने अभी तक स्वगणना की प्रक्रिया पूरी नहीं की है, वे निर्धारित समय सीमा के भीतर इसे पूरा कर सकते हैं।

जनगणना 2027 के दूसरे चरण के अंतर्गत जारी स्व–गणना अभियान में 19 नवम्बर को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी ऑनलाइन स्व–गणना की प्रक्रिया पूरी की। इस अवसर पर उन्होंने 30 नवंबर तक चलने वाली ऑनलाइन स्व–गणना की प्रक्रिया में सभी नागरिकों से हिस्सेदारी की अपील की। इस अवसर पर प्रदेश की मुख्य प्रधान जनगणना अधिकारी शीतल वर्मा उपस्थित रहीं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 19 नवम्बर को गोरखनाथ मंदिर परिसर स्थित अपने आवास पर प्रदेश में जारी ऑनलाइन जनगणना के दूसरे चरण के अंतर्गत स्व–गणना (सेल्फ एनुमेरेशन) का ऑनलाइन फॉर्म भरा। मुख्यमंत्री ने स्व–गणना पोर्टल पर जाकर समस्त प्रश्नावली (40 प्रश्न) के सापेक्ष अपनी जानकारी दर्ज की। उन्होंने सभी कॉलम को पूर्ण किया। उन्होंने प्रदेश के सभी नागरिकों से इस प्रक्रिया में सहभागिता दर्ज कराने की अपील की। इस संबंध में सोशल मीडिया प्लेटफार्म 'एक्स' पर एक पोस्ट में मुख्यमंत्री ने लिखा, 'स्व–गणना राष्ट्रीय कार्य है। आज (गुरुवार) 19 नवम्बर को गोरखपुर में जनगणना–2027 के अंतर्गत अपनी स्व–गणना की प्रक्रिया पूर्ण की। जनगणना केवल जनसंख्या की गणना नहीं, बल्कि हर नागरिक की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और बेहतर भविष्य की योजनाओं का आधार है। सभी सम्मानित उत्तर प्रदेश वासियों से अपील है कि इसमें बढ़–चढ़कर भाग लें और विकसित भारत–विकसित उत्तर प्रदेश के निर्माण के इस महत्वपूर्ण कार्य में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें।'

मुख्यमंत्री योगी ने राज्य के सभी निवासियों से अपील की कि वे डिजिटल स्व–गणना के माध्यम से इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय अभियान में सक्रिय रूप से भाग लें।



बरातियों की वैन और होंडा सिटी की आमने–सामने टक्कर, दो की मौत



टी0आई0एल0 संवाददाता

लखनऊ। मलिहाबाद क्षेत्र में एक दर्दनाक सड़क हादसे में दो लोगों की मौत हो गई, जबकि करीब एक दर्जन लोग घायल हो गए। पुरवा गांव के पास बरात से लौट रही वैन और होंडा सिटी कार के बीच आमने–सामने की टक्कर हो गई। हादसे में दोनों वाहनों के परखच्चे उड़ गए। दुर्घटना के बाद मौके पर चीख–पुकार मच गई। कई घायलों की हालत गंभीर बताई जा रही है।

जानकारी के मुताबिक, वैन सवार लोग बरात में शामिल होकर वापस लौट रहे थे। इसी दौरान पुरवा गांव के पास वैन और होंडा सिटी कार अनियंत्रित होकर आमने–सामने टकरा गईं। टक्कर इतनी भीषण थी कि वाहनों में सवार लोगों को संभलने तक का मौका नहीं मिला। हादसे के बाद घटनास्थल पर अफरातफरी मच गई।

आवाज सुनकर आसपास के ग्रामीण और राहगीर मौके पर पहुंच गए। लोगों ने वाहनों में फंसे घायलों को बाहर निकालने में मदद की। सूचना मिलते ही पुलिस भी घटनास्थल पर पहुंच गई और स्थानीय लोगों की सहायता से घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया।

भाजपा की विदाई का समय आ गया : अखिलेश यादव

टी0आई0एल0 संवाददाता

लखनऊ। समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की मौजूदगी में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के तीन नेताओं ने सपा की सदस्यता ग्रहण की। समर्थकों के साथ पार्टी में शामिल होने वालों में मऊ के उत्पल राय, एनसीआर के अनिल कसाना और सीतापुर के अवधेश चौहान रहें।

इस मौके पर अखिलेश यादव ने कहा कि इस बार उत्तर प्रदेश की जनता भाजपा की शानदार विदाई करने जा रही है। उन्होंने दावा किया कि भाजपा को चुनाव में हार का सामना करना पड़ेगा और सीतापुर में भी पार्टी शून्य पर पहुंच जाएगी।

अखिलेश यादव राजधानी लखनऊ में पत्रकारों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने भाजपा के नारे पर तंज कसते हुए कहा कि, कमल मुरझा गया है, इसलिए नारा लगा रहे हैं– राधे–राधे, कमल खिला दे। हमारे यहां तो विदाई के समय राधे–राधे कहते



हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा के लोग भी जानते हैं कि इस बार जनता उन्हें हराने जा रही है। चुनाव की तारीख घोषित होने के दिन ही भाजपा अपनी हार समझ जाएगी। उन्होंने कहा कि भाजपा हटेगी तो संकट मिटेगा और लोगों को न्याय एवं सम्मान मिलने का रास्ता खुलेगा।

सपा अध्यक्ष ने कहा कि पार्टी में बड़ी संख्या में ऐसे लोग शामिल हो रहे हैं, जो समाजवादी आंदोलन को मजबूत करने के लिए आगे आ रहे हैं। उन्होंने नए सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि समाजवादी विचारधारा के साथ जुड़ने वालों की संख्या बढ़ रही है। मतदाता सूची और चुनाव प्रक्रिया को लेकर अखिलेश यादव ने चुनाव आयोग पर भी सवाल उठाए। उन्होंने आरोप लगाया कि पीडीए (पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक) समाज के वोटों के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है और चुनाव आयोग भाजपा के साथ मिला हुआ है। उन्होंने कहा कि सपा उन अधिकारियों के खिलाफ चुनाव आयोग को पत्र लिखेगी, जिन्होंने पिछले दस वर्षों से भाजपा के पक्ष में काम किया है। पार्टी ऐसे अधिकारियों की भूमिका को आयोग के संज्ञान में लाएगी।अग्निवीर योजना को लेकर भी अखिलेश यादव ने अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि जब भी समाजवादी पार्टी को सरकार में काम करने का मौका मिलेगा, तो अग्निवीर जैसी व्यवस्था को हमेशा के लिए खत्म कर दिया जाएगा। उनके मुताबिक, युवाओं के भविष्य और सम्मान से जुड़े मुद्दों पर समाजवादी पार्टी अपनी प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ेगी।



क्वीन मेरी में अब गंभीर मरीजों की एबीजी जांच होगी, टीईएनएस से कम होगी प्रसव पीड़ा

टी0आई0एल0 संवाददाता

लखनऊ। क्वीन मेरी अस्पताल में अब गंभीर मरीजों की एबीजी (आर्टेरियल ब्लड गैस) जांच के नमूने दूसरे केंद्रों पर नहीं भेजने पड़ेंगे। अस्पताल में ही जांच की सुविधा मिलने से गंभीर मरीजों की बीमारी का तत्काल पता लग सकेगा और इलाज में तेजी आएगी। वहीं, प्रसव पीड़ा कम करने के लिए टीईएनएस तकनीक भी शुरू की गई है। इसमें त्वचा पर इलेक्ट्रोड लगाकर हल्के विद्युत संकेत दिए जाते हैं, जिससे दर्द कम करने में मदद मिलती है। यह पहले से उपलब्ध एपिड्यूरल सुविधा का अतिरिक्त विकल्प होगा।

ये जानकारी क्वीन मेरी की विभागाध्यक्ष डॉ. अंजू अग्रवाल ने शुक्रवार को 94वें स्थापना दिवस समारोह में दी। ब्राउन हॉल में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने एक साल की उपलब्धियां साझा कीं। बताया कि गर्भवती और गंभीर बीमारियों से जूझ रही महिलाओं को बेहतर इलाज देने के लिए रोबोटिक सर्जरी और बांझपन के उपचार के लिए आईवीएफ सुविधाओं का विस्तार किया गया है। इसके अलावा समय से पहले जन्मे और कम वजन वाले नवजातों की देखभाल के लिए विशेष कंगारू मदर केयर (केएमसी) वार्ड बनाया गया है। डॉ. अंजू अग्रवाल के मुताबिक, जनवरी से अक्तूबर के बीच अस्पताल की ओपीडी में 77,005 मरीजों को इलाज दिया गया। इस दौरान 6,664 प्रसव और 16,359 सर्जरी हुईं। गंभीर मरीजों के इलाज में भी सुधार दर्ज किया गया है। वर्ष 2025 में भर्ती 1,431 गंभीर मरीजों में 84.2 फीसदी की जान बचाई गई थी, जबकि 2026 में अब तक भर्ती 1,526 गंभीर मरीजों में 86.23 फीसदी को बचाने में सफलता मिली है।

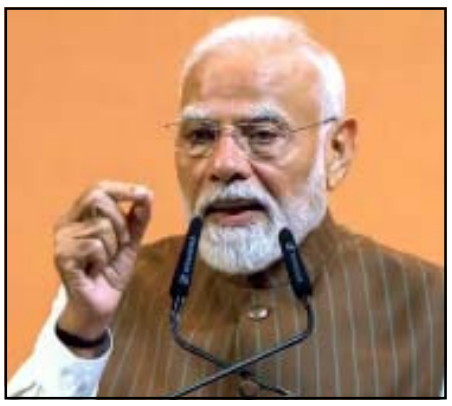
केजीएमयू की कुलपति डॉ. सोनिया नित्यानंद ने कहा कि क्वीनमेरी में आधुनिक सुविधाओं का विस्तार मातृ एवं प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करेगा। यहां प्रदेश के अलावा आसपास के राज्यों से भी जटिल गर्भावस्था वाली महिलाएं इलाज के लिए आती हैं। अस्पताल में हर साल करीब 10 हजार प्रसव होते हैं।

युवा ही देश की असली ताकत और भविष्य : पीएम मोदी

टी0आई0एल0 संवाददाता

लखनऊ। प्रधानमंत्री मोदी लखनऊ के इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में आयोजित पांचवें राष्ट्रीय कौशल दीक्षांत समारोह में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने देशभर के युवाओं को संबोधित किया और कौशल विकास को राष्ट्र निर्माण का महत्वपूर्ण आधार बताया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि पश्चिम बंगाल में जिस उत्साह और उम्मीदों के साथ वह आईआईटी के छात्रों के बीच पहुंचे थे, उसी ऊर्जा और जोश के साथ आईटीआई के विद्यार्थियों के बीच आए हैं। उन्होंने कहा कि चाहे आईआईटी हो या आईटीआई हो, मेरे लिए तो यही मेरे देश की अमानत है। यही मेरे देश का सामर्थ्य है और यही मेरे देश का भविष्य है। आईटीआई में पढ़ते हुए जो आपने हुनर सीखा है, वो



अब विकसित भारत की बड़ी ऊर्जा है। उन्होंने कहा कि जब हमारे देश में आक्रमणकारी आए, तब हमारा राष्ट्र एक स्वर्णिम युग से गुजर रहा था और पूरी दुनिया के लिए आकर्षण और ईर्ष्या का केंद्र था। जब वे भारत आए, तो उन्होंने सबसे पहले हमारी कारीगरी और कौशल पर प्रहार किया। बाद में अंग्रेज आए और उन्होंने तरीका बदल दिया। एक ऐसी शिक्षा प्रणाली थोपी, जिसमें हमारी कौशल–आधारित व्यवस्था सिमटकर केवल कागजी काम करने वाले क्लर्क तैयार करने तक रह गई। अंग्रेजों ने भी भारत में कौशल को तबाह करके अपने यहां इंडस्ट्री को आगे बढ़ाया। यहां से सारी चीजें ले गए और समय के साथ अंग्रेजों के कागजी काम को सम्मान के साथ देखा जाने लगा। हमारे समाज की स्थिति ऐसी है कि अगर कोई बच्चा आईटीआई में दाखिल लेता है तो उसके मां–बाप रिश्तेदारों को बताते नहीं हैं, ऐसी परिस्थिति पैदा हो गई, लेकिन मैंने ठान लिया है कि मुझे इस परिस्थिति को बदलना है। जितना सम्मान आईआईटी के लोगों को होगा, उतना ही सम्मान मेरे आईटीआई के बच्चों का भी होगा। आज भारत, विश्व की स्किल कैपिटल बनने की तरफ आगे बढ़ रहा है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज भारत जिस तेजी से विकास कर रहा है उससे युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बन रहे हैं। उन्होंने कहा कि जब आप कोई हुनर सीखते हैं, तो आप केवल मशीनों पर काम नहीं करते। आप लोगों की जिंदगी को आसान बनाते हैं। आप देश का सामर्थ्य बढ़ाते हैं। मैं देश के हर युवा से कहता हूं कि आपके सामने इस समय पूरा आसमान है।बड़े सपने देखिए, अपने कौशल का विकास करिए और अपने सपनों को पूरा करने के लिए पूरी ताकत लगा दीजिए। आज भारत, विश्व की कौशल राजधानी बनने की तरफ आगे बढ़ रहा है।

आप लोग उसके केंद्र में है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश के युवाओं के लिए एक खुशखबरी है कि अगले साल 2027 में भारत वर्ल्ड स्किल्स एशिया प्रतियोगिता की मेजबानी करने वाला है। दुनिया के एशिया के नौजवान यहां आने वाले हैं। ये आयोजन 2027 में उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा में होगा। दुनिया के अनेक देशों के युवाओं की मेजबानी उत्तर प्रदेश करने वाला है। मैं उत्तर प्रदेश को इसकी भी अग्रिम शुभकामनाएं देता हूं।

चक्रवात की वजह से प्रदेश में तेजी से गिरेगा पारा

टी0आई0एल0 संवाददाता

लखनऊ। यूपी में मौसम बदलने वाला है। चक्रवात अकवान के असर से पूर्वांचल और दक्षिणी यूपी में हल्की बूंदाबांदी के आसार हैं। इस दौरान 20 से 30 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तेज पुरवा हवाएं चलने की भी संभावना है।

हालांकि, जल्द ही मौसम फिर करवट लेगा। अगले तीन से चार दिनों में रात के तापमान में तीन से पांच डिग्री और दिन के पारे में करीब दो डिग्री सेल्सियस तक गिरावट आने के संकेत हैं। इससे ठंड बढ़ेगी। सुबह के समय कोहरे का असर भी बढ़ेगा। पूर्वी यूपी और मध्यांचल में 15 से 25 किमी रफ्तार वाली पुरवाई चली। ज्यादातर जिलों में अच्छी धूप खिली और तापमान में हल्की बढ़त दर्ज हुई।क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केंद्र, लखनऊ के वरिष्ठ वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह के अनुसार, चक्रवात और पुरवा हवाओं का असर 23 नवंबर से खत्म हो जाएगा। इसके बाद तराई समेत प्रदेश के ज्यादातर इलाकों में सुबह मध्यम से घना कोहरा छाने की संभावना है। तापमान में गिरावट के साथ रात और सुबह की ठंड बढ़ेगी।

शेनझेन में पुतिन व जिनपिंग पड़े भारी

मनोज कुमार अग्रवाल

दुनिया की तीन महा शक्तियों के मुखिया गत 18 नवम्बर को चीन के शेनझेन शहर में इकट्ठा हुए तब दुनिया को बहुत उम्मीदें थीं। ईरान, गाजा पट्टी और यूक्रेन में जन–धन का जो संहार हो रहा उसे रोकने में रूस, अमेरिका और चीन ने कोई ठोस कदम नहीं उठाया। यूक्रेन के राष्ट्रपति ब्लादिमीर जेलेंस्की ने सही चिंता जताई थी कि दुनिया की ये तीन बड़ी शक्तियां यूक्रेन व ईरान को वार्ता में क्यों नहीं शामिल करतीं। फिलिस्तीन, यूक्रेन और ईरान को साथ बैठाये बिना उनके बारे में कोई फैसला लेना ठीक नहीं। जेलेंस्की ने तो शेनझेन में हुई बैठक को 1945 के ऐतिहासिक याल्टा सम्मेलन की तरह बताया था जिसमें द्वितीय विश्व युद्ध के बाद महाशक्तियों ने यूरोप की राजनीतिक व्यवस्था तय कर दी थी। जर्मनी, कोरिया के टुकड़े हो गये थे। जर्मनी तो एक हो गया लेकिन कोरिया के दोनों हिस्से आज भी लड़ रहे हैं। बहरहाल यूक्रेन और ईरान को लेकर वैसा तो कुछ तय नहीं हुआ लेकिन ट्रम्प की नीयत जरूर साफ हो गयी। उन्होंने परमाणु बमों को कम करने की बात कहीं तो चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने कहा कि परमाणु हथियारों को पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिए। ट्रम्प का यह कहना कि ईरान को परमाणु हथियार नहीं बनाने देंगे, उनकी जिद को दर्शाता है। उधर, रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद दुनिया में अलग–थलग पड़ गये थे लेकिन शेनझेन की मीटिंग ने पुतिन की स्वीकार्यता साबित कर दी है। इस प्रकार इस महाबैठक में शी जिनपिंग और



पुतिन महारथी बनकर उभरे हैं। संयुक्त राष्ट्र में सुधार की बात कही गयी है लेकिन वीटो का विशेषाधिकार कायम रहेगा।

करीब 81 मिनट तक चली इस मीटिंग में तीनों देश संयुक्त राष्ट्र में सुधार लाने, तेल की आपूर्ति बढ़ाने और परमाणु जोखिमों को कम करने के लिए बातचीत करने पर सहमत हुए।बयान में कहा गया है कि नेता संयुक्त राष्ट्र में सुधारों को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं, ताकि वैश्विक चुनौतियों से अधिक प्रभावी ढंग से निपटा जा सके। साथ ही, वे ऊर्जा की स्थिर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए तेल उत्पादों के उत्पादन और आपूर्ति को बढ़ाने, परमाणु जोखिमों को कम करने और परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकने की दिशा में काम करने के लिए भी प्रतिबद्ध हैं।तीनों देशों ने इंटरनेशनल क्रिमिनल कोर्ट पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि सरकारी अधिकारियों को कोर्ट की कानूनी कार्रवाई से छूट (इम्युनिटी) मिलनी चाहिए और चेतावनी दी कि कोर्ट को अपने अधिकार क्षेत्र का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। पुतिन इस कोर्ट द्वारा वांछित हैं। इस सवाल का पहला जवाब तो यही है कि जिस रूस को यूरोप ने अलग–थलग करने की पूरी कोशिश की, वही रूस, चीन और अमेरिका के साथ पूरी दुनिया के भाग्य का फैसला करने वाली टेबल पर बैठा था। पुतिन ने पूरी दुनिया को बगैर कहे बता दिया कि आज भी रूस सुपरपावर है।

दूसरा और सबसे महत्वपूर्ण पहलू ये है कि तेल आपूर्ति बढ़ाने पर तीनों देश सहमत हुए।इसमें सबसे ज्यादा फायदा रूस का ही है। रूस तेल और गैस का बड़ा सप्लायर है। तेल आपूर्ति बढ़ाने पर सहमति बताती है कि अब उसकी आर्थिक स्थिति और सुधरने वाली है। तीसरा सबसे अहम पहलू ये है कि तीनों देशों ने इंटरनेशनल क्रिमिनल कोर्ट को एक तरह से उसकी हद बता दी। इस कोर्ट ने पुतिन को ही वांटेड घोषित कर रखा है। इसकी वजह से पुतिन कई अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग नहीं ले पा रहे।एक तरह से इस कोर्ट ने भी उन्हें अलग–थलग करने में बड़ी भूमिका निभाई है। ऐसे में इस कोर्ट को फटकार पुतिन की बड़ी जीत है।

इस मीटिंग से पुतिन ने यूक्रेन को सीधा मैसेज ये दिया कि जिसके बल पर उसने रूस से लड़ाई मोल ली, वो उसके साथ डील करता है। इस मीटिंग में ट्रंप ने पुतिन को अपना दोस्त बताया।जाहिर है यूक्रेन के हौसले इस मीटिंग के बाद और पस्त हो गए होंगे। यूक्रेन युद्ध लंबा खींचने की वजह से रूस के लोगों को भी काफी दिक्कतें हुईं। पुतिन ने इस मीटिंग के जरिए उन तक भी संदेश पहुंचा दिया कि भले ही कुछ दिनों की दिक्कत हुई पर वो विजेता बनकर निकले हैं और आगे आने वाले दिनों में रूस का दम–खम दुनिया मानेगी।

उधर, दक्षिण चीन के क्वांगतोंग प्रांत के शनचन शहर में 18 नवंबर को आयोजित 2026 एपेक सीईओ शिखर सम्मेलन में, चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने एक महत्वपूर्ण पहल का प्रस्ताव रखा। एपेक सीईओ शिखर सम्मेलन में अपने मुख्य भाषण में शी चिनफिंग ने कहा कि एशिया–प्रशांत क्षेत्र में दुनिया के कई अहम बे एरिया मौजूद हैं, और बे एरिया की अर्थव्यवस्था में खुलेपन, तालमेल और सकारात्मक प्रभावों जैसी विशिष्ट विशेषताएं हैं। बे एरिया एशिया–प्रशांत अर्थव्यवस्था के लिए एक अत्यंत गतिशील केंद्र के रूप में कार्य करता है। एपेक बैठक के आयोजन स्थल के रूप में शनचन शहर क्वांगतोंग–हांगकांग–मकाओ ग्रेटर बे एरिया में ही स्थित है। प्रशांत तट पर नजर डालें, तो टोक्यो बे एरिया, सैन फ्रांसिस्को बे एरिया और सिडनी बे एरिया जैसे कई प्रमुख बे एरिया यहां केंद्रित हैं।

सबसे बड़ी बात इस मीटिंग की ये रही कि ट्रंप इस मीटिंग से रूस और चीन के साथ परमाणु हथियारों पर कोई समझौता चाहते थे।मगर, चीन ने इस मसले को अटका दिया। जिनपिंग ने कहा कि परमाणु हथियारों पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए और उन्हें नष्ट कर दिया जाना चाहिए। उन्होंने एक ऐसी दुनिया बनाने का आह्वान किया जो परमाणु हथियारों से मुक्त हो, और परमाणु युद्ध को रोकने के लिए प्रयास करने पर जोर दिया। उनके हवाले से कहा गया कि परमाणु युद्ध जीता नहीं जा सकता और इसे कभी लड़ा भी नहीं जाना चाहिए। आज की तारीख में रूस के पास सबसे ज्यादा परमाणु हथियार हैं। इसके बाद अमेरिका के पास हैं।चीन के पास इन दोनों के मुकाबले बेहद कम परमाणु हथियार हैं। ऐसे में चीन के लिए किसी भी समझौते पर पहुंचना कमजोरी होती है।इससे वो अपने परमाणु हथियार नहीं बढ़ा पाता। इसलिए जिनपिंग ने परमाणु हथियारों को ही खत्म करने पर जोर देकर बात टाल दी और ट्रंप कुछ नहीं कर पाए।चीन ने यूक्रेन और ईरान युद्ध पर इस बैठक में कोई ठोस बात नहीं होने दी।इसकी वजह लंदन के टोनी ब्लेयर इंस्टीट्यूट फॉर ग्लोबल चेंज में सीनियर पॉलिसी एडवाइजर रूबी ओसमैन बताती हैं?उन्होंने कहा कि चीन खुद को अमेरिका और रूस से अलग तरह की महाशक्ति के रूप में पेश करना पसंद करता है।

रोहिंग्या को इंतजार

रोहिंग्या से संबंधित अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के फैसले से जहां इस समुदाय में खुशी की लहर है, वहीं, म्यांमार सरकार ने इसे खारिज कर दिया है। दुनिया की अदालत ने लंबी सुनवाई के बाद म्यांमार को अपने रोहिंग्या अल्पसंख्यक समुदाय के खिलाफ नरसंहार के लिए दोषी करार दिया है। ऐसा विश्व स्तर पर पहली बार हुआ है। म्यांमार सरकार कठघरे में खड़ी है, लेकिन गलती मानने को तैयार नहीं है। सवाल फिर वही है, रोहिंग्या के पलायन के लिए कौन जिम्मेदार है? संयुक्त राष्ट्र के आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, करीब 13,29,300 रोहिंग्या अपने देश से बाहर रह रहे हैं। साल 2017 में जब म्यांमार में उनके साथ ज्यादती शुरू हुई थी, तब करीब सात लाख रोहिंग्या देश छोड़ने को मजबूर हुए थे और उसके बाद से पलायन की कई लहरें आईं। बांग्लादेश में लगभग 12 लाख, तो मलयेशिया में सवा लाख और भारत में 28 हजार से ज्यादा रोहिंग्या रहने को मजबूर हैं। क्या रोहिंग्या वापस अपने देश लौट पाएंगे? भारत सरकार ने उचित ही टिप्पणी की है, रोहिंग्या की सहज और जल्दी वापसी के प्रयास शुरू होने चाहिए।

म्यांमार सरकार भले ही अपनी कमी को झुठला रही है, लेकिन यह सच है कि अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में पर्याप्त सुबूत पेश किए गए हैं। न्यायालय ने बहुमत से कहा है कि हजारों रोहिंग्या नागरिकों की हत्या की गई, महिलाओं को व्यापक यौन हिंसा का सामना करना पड़ा और बच्चों पर भी क्रूरता का कहर बरपा। जो आरोप साबित हुए हैं, उन्हें म्यांमार शायद ही मानेगा। म्यांमार के पीछे चीन मजबूती से खड़ा है, उसने भी न्यायालय के फैसले पर असंतोष जताया है। बहाना बनाया जा रहा है कि न्यायालय का फैसला एकमत से नहीं आया है। कुल 15 न्यायाधीश थे, जिनमें से छह इस फैसले के खिलाफ थे। आमतौर पर बहुमत से आए फैसले को मानने की परंपरा पूरी दुनिया में रही है, पर इस फैसले को न मानना गंभीर चिंता की बात है। म्यांमार ने न केवल नरसंहार से इनकार किया है, रोहिंग्या के खिलाफ चलाए गए अपने सैन्य अभियान का भी बचाव किया है। जब सरकारें तथ्य और तर्क से परे चले जाती हैं, तब समस्याओं का विस्फोट शुरू होता है।

बेकाबू दरिया के किनारे

तपोवन की दोपहर में लोकतांत्रिक विरासत के अहम बिंदु अगर सदन के प्रांगण में सवाल खड़े करते रहे, तो राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं का दरिया बेकाबू होने लगा है। मीडिया से रूबरू होते कुल्लू और नगरोटा बगवां के विधायक आखिर इशारों–इशारों में कह क्या रहे हैं। सुंदर सिंह ठाकुर के वक्तव्यों ने बता दिया कि उनका वजन क्या है, जबकि पहली बार विधायक बने आर एस बाली अपने दबाव को तोल रहे हैं। एक को मंत्री पद चाहिए, तो दूसरे को कांगड़ा की पतवार। विधानसभा चुनाव से सिर्फ कुछ महीनों या साल भर के शेष में अपना रुतबा डालने की कोशिश कमोबेश हर विधायक करेगा। सुंदर सिंह ठाकुर मंत्री बन सकते हैं, तो ऐसी कौनसी शक्तियां कांग्रेस में हैं जो उनकी 'झंडी' को तार–तार कर रही हैं। हैं कई खामोशियां तेरे वजूद में, तूने तो सिर्फ खुद को पुकारा है। हिमाचल के राजनीतिक माहौल में अब तरह–तरह की खिचड़ी पक रही है, तो आकाश की हवा बेचैन है। आश्चर्य यह कि सारी बेचैनियां पलकों पर सवार होकर जुबान को हौसला दे रही हैं। सुंदर सिंह का हौसला विधानसभा परिसर के बाहर परवान चढ़ा, तो सियासत का यह रंग अब बिखर सकता है। अगर विधायक दल की बैठक में कांग्रेस के मुद्दे बिफर कर, मीडिया से चुगलखोरी कर रहे हैं, तो पार्टी के भीतर एक विपक्ष खड़ा है। बाली ने कांगड़ा जिला के विभाजन को लेकर अपनी कमान सीधी की है, तो इस लश्कर में बड़ा सामान है। कम से कम जिले के पुनर्गठन पर सियासत की आरजू–सियासत की ही गलियों से युद्धरत है। बहरहाल यह इक्का दुक्का विधायकों का प्रदर्शन नहीं, बल्कि राज्य के सामने खड़े अनेक मसले सदन के बाहर अपना कद बता रहे हैं। इससे पहले कि सरकार द्वारा पूर्व भाजपा के शासन काल पर श्वेत पत्र बाहर आता, विपक्ष ने जमीनी मसलों की लुकाछिपी में अपनी विस्तृत तकरीर रख दी है। कांगड़ा एयरपोर्ट के दायरे में बिकी जमीनें या पालमपुर से निकलते जमीन घोटाले के धुएं को माचिस दिखाकर, भाजपा की फेहरिस्त में धारा 118 के जबड़ों में विरोध के टुकड़े फंसे हैं। कम से कम हम सत्र की तासीर में कई आक्रमण देख सकते हैं।

जाहिर है चुनावी मुद्दे बनाने के लिए अब शेष बचे सत्रों का लोहा पिघलेगा, तो सामने वही पुराने आक्रोश बाहुबली हो जाएंगे। ऐसे में तपोवन परिसर इस बार विभिन्न अवसरों पर अपने ही शोरगुल से कानों को ढांपने की कोशिश कर रहा है। जो सदन में नहीं कहा जाएगा या जिसे सुनने की मशक्कत बढ़ जाएगी, उसके लिए बाहर के दरवाजे काम आएंगे। विडंबना यह है कि हिमाचल के लिए आम सहमति के मुद्दे कब परवान चढ़ेंगे। ऐसे हजारों दस्तखत दोनों ओर से मिल जाएं, अनुबंधों पर तराशा रोजगार मिल जाएगा, सत्ता की नियुक्तियों में कई नेताओं का उद्धार हो जाएगा, लेकिन प्रदेश की साझी विरासत में दोनों पार्टियों में मतैव्य की कोशिश नहीं होगी। सदन में तपती राजनीति अगर मशगूल भी रहे, बाहर नवंबर महीने की खुशकी का असर कौन देखेगा। जलवायु परिवर्तन में उजड़ते खेत, माफिया के कब्जे में बजरी और रेत तथा जमीनों की खरीद फरोख्त में लुटता हिमाचल किसी एक पक्ष पर दोषारोपण से सबूत एकत्रित नहीं करेगा।

वैष्णो देवी के दरबार में 87 लाख पहुंचे श्रद्धालु

जम्मू, एजेंसी। माता वैष्णो देवी के दरबार में इस साल श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ रही है। अब तक करीब 87 लाख श्रद्धालु मां के दर्शन कर चुके हैं और श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड को उम्मीद है कि साल के अंत तक श्रद्धालुओं की संख्या एक करोड़ के आंकड़े को पार कर सकती है। यात्रा में लगातार बढ़ रही भीड़ को बेहतर सुविधाओं और बुनियादी ढांचे में सुधार का परिणाम माना जा रहा है।

श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड के सीईओ सचिन कुमार ने कटड़ा में पत्रकारों से बातचीत में बताया कि इस साल पिछले



वर्ष की तुलना में श्रद्धालुओं की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि बोर्ड यात्रियों की सुविधा, बेहतर व्यवस्थाओं और यात्रा अनुभव को सुधारने के लिए लगातार प्रयास कर रहा है। देश–विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं का सुविधाओं पर भरोसा बढ़ा है।

उन्होंने उम्मीद जताई कि साल के बाकी दिनों में भी श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ेगी और एक करोड़ का आंकड़ा पार हो सकता है। हालांकि, इसकी स्पष्ट तस्वीर अगले एक महीने में सामने आएगी।

उन्होंने श्रद्धालुओं से बड़ी संख्या में माता के दरबार में पहुंचकर आशीर्वाद लेने की अपील भी की।

रूस सशर्त देगा यूक्रेन को सुरक्षा की गारण्टी

मास्को, एजेंसी। रूस के एक वरिष्ठ राजनयिक ने 20 नवम्बर को कहा कि यूक्रेन की सुरक्षा गारंटी के मुद्दे पर तभी चर्चा की जा सकती है, जब कीव रूस की उस मांग को नॉन–नेगोशिएबल मान ले कि यूक्रेन को नाटो में शामिल नहीं होना चाहिए। उप विदेश मंत्री सर्गेई रयाबकोव ने कहा कि जब ऐसा हो जाएगा, तब मुझे लगता है कि सुरक्षा गारंटी के मुद्दे पर किसी न किसी रूप में चर्चा की जा सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि रूस बातचीत का विरोध नहीं करता, लेकिन वह यूक्रेन के उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) में शामिल होने के मुद्दे पर कोई चर्चा नहीं करेगा। रियाबकोव ने कहा कि यूक्रेन की नाटो सदस्यता रूस के लिए पूरी तरह अस्वीकार्य है। उन्होंने उन प्रस्तावों को भी खारिज कर दिया, जिनमें यूक्रेन को नाटो जैसी कोई विशेष स्थिति देने या इस मुद्दे का कोई रचनात्मक समाधान खोजने की बात कही गई है। रयाबकोव ने बताया कि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूरोपीय ट्रोइका के प्रतिनिधियों को मॉस्को आने का निमंत्रण देने का फैसला किया है। हालांकि, हाल में अबू धाबी में हुई बैठक



समेत पहले इस्तेमाल किए गए त्रिपक्षीय प्रारूप को लेकर फिलहाल कोई औपचारिक सहमति या समझ नहीं बनी है। दूसरी ओर, 19 नवम्बर को डोनाल्ड ट्रंप, व्लादिमीर पुतिन और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने शेनझेन में हुई बैठक के बाद परमाणु जोखिम कम करने, संयुक्त राष्ट्र में सुधार का समर्थन करने और परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पादों की आपूर्ति बढ़ाने पर बातचीत जारी रखने का संकल्प लिया। सिन्हुआ समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, रियाबकोव ने कहा कि नाटो के भीतर कीव को किसी तरह की अर्ध–सदस्यता देने का विचार या इस दिशा में कोई नया समाधान तलाशना भी हमारे लिए स्वीकार्य नहीं है।

विकास कार्यों की चार सदस्यीय कमेटी ने की समीक्षा, तेजी लाने के निर्देश

अंबाला, एजेंसी। छावनी के विभिन्न वार्डों में स्वीकृत विकास कार्यों को जल्द से जल्द धरातल पर उतारने के लिए नगर परिषद प्रशासन पूरी तरह सक्रिय हो गया है।

प्रदेश के कैबिनेट मंत्री अनिल विज के दिशा–निर्देशों और प्रयासों के तहत शुक्रवार को नगर परिषद कार्यालय में एक उच्चस्तरीय बैठक हुई।

बैठक के दौरान विकास कार्यों की निगरानी के लिए गठित चार सदस्यीय कमेटी ने वार्डवार स्वीकृत परियोजनाओं की विस्तार से समीक्षा की। कमेटी सदस्यों ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि जिन कार्यों के टेंडर लग चुके हैं, उन्हें बिना किसी देरी के शुरू करवाया जाए और लंबित टेंडर प्रक्रियाओं को जल्द से जल्द पूरा किया जाए, ताकि स्थानीय निवासियों को मूलभूत सुविधाओं का लाभ समय पर मिल सके।नगर परिषद अध्यक्ष स्वर्ण कौर ने बताया कि शहर के प्रमुख आकर्षण के केंद्र सुभाष पार्क में प्रस्तावित विकास व सौंदर्यीकरण कार्यों को शीघ्र शुरू करवाने पर बैठक में गंभीरता से चर्चा हुई। इसके अलावा, नाइट फूड स्ट्रीट मार्केट में बिजली आपूर्ति सुचारू करने के लिए नया ट्रांसफार्मर लगाने के कार्य में भी तेजी लाने के निर्देश संबंधित विभाग और अधिकारियों को दिए गए।



मोदी का उद्योगपतियों से वाजिब सवाल



वीपी राहुल

नई दिल्ली में फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) की वार्षिक आम बैठक और सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि सरकार ने उद्योगों को कई तरह की कर रियायतें दी हैं और कारोबार करना आसान बनाया है, लेकिन कंपनियों को भी यह बताना चाहिए कि उन्होंने इन सुविधाओं के बदले कर्मचारियों और अर्थव्यवस्था के लिए क्या किया है। मोदी ने उद्योगपतियों से पूछा कि जब सरकार ने कॉरपोरेट टैक्स की दर घटाई और आम लोगों को आयकर में राहत दी, तो क्या कंपनियों ने अपने कर्मचारियों की तनख्वाह बढ़ाई या नए लोगों को रोजगार दिया? उन्होंने कहा कि वर्ष 2014 में कॉरपोरेट टैक्स की मूल दर 30 प्रतिशत थी, जिसे घटाकर 22 प्रतिशत कर दिया गया। इसके अलावा नई कर व्यवस्था के तहत 12 लाख रुपये तक की आय पर आयकर में राहत दी गई है। प्रधानमंत्री ने सवाल किया कि इन फैसलों का लाभ कर्मचारियों तक किस हद तक पहुंचा है। प्रधानमंत्री ने उद्योग जगत पर तंज कसते हुए कहा कि सरकार की ओर से लगातार सुविधाएं दिए जाने के बावजूद उद्योगों की मांगें खत्म नहीं होतीं। उन्होंने कहा, "क्या आपने अपने कर्मचारियों की सैलरी बढ़ाई? क्या आपने कर्मचारियों की संख्या बढ़ाई? नहीं। आपका रवैया यही रहता है कि मोदी जी, आप अपना काम कीजिए, हम देखेंगे।" उन्होंने कहा कि देश के विकास की जिम्मेदारी केवल सरकार की नहीं है, बल्कि उद्योग जगत को भी इसमें सक्रिय भूमिका निभानी होगी।

मोदी की यह टिप्पणी ऐसे समय आई है, जब कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने अमेरिका में भारत की अर्थव्यवस्था, बेरोजगारी और निजी निवेश को लेकर सवाल उठाए थे। न्यूयॉर्क स्थित कोलंबिया यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल एंड पब्लिक अफेयर्स में विद्यार्थियों और शिक्षाविदों से बातचीत के दौरान राहुल गांधी ने कहा था कि भारत में बेरोजगारी की समस्या गंभीर है और शिक्षा व्यवस्था में भी गहरी चुनौतियां हैं। उन्होंने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ छोटे और मझोले कारोबार तथा कृषि क्षेत्र हैं, क्योंकि रोजगार पैदा करने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। राहुल ने सवाल उठाया कि देश में निजी निवेश पर्याप्त मात्रा में क्यों नहीं हो रहा है। राहुल गांधी ने यह भी कहा कि भारत के युवाओं, खासकर शिक्षित मध्यमवर्गीय परिवारों के बच्चों को अपने भविष्य को लेकर स्पष्ट रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है। उनके मुताबिक, रोजगार के अवसरों की कमी और शिक्षा व्यवस्था की समस्याएं आर्थिक विकास के सामने बड़ी चुनौती हैं। उन्होंने छोटे और मझोले उद्योगों को रोजगार सृजन का प्रमुख आधार बताते हुए कहा कि इन क्षेत्रों को मजबूत किए बिना रोजगार की समस्या का समाधान मुश्किल है।

इसी राजनीतिक और आर्थिक पृष्ठभूमि में प्रधानमंत्री मोदी ने उद्योगपतियों से उनकी जिम्मेदारी पर सवाल किया। हालांकि, प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में राहुल गांधी का नाम लेकर सीधे जवाब नहीं दिया, लेकिन उनके भाषण का समय और रोजगार तथा वेतन पर उठाए गए सवालों को कांग्रेस नेता की हालिया टिप्पणियों के संदर्भ में देखा जा रहा है। मोदी ने उद्योग जगत को यह संदेश देने की कोशिश की कि सरकार की ओर से करों में राहत और कारोबारी माहौल बेहतर बनाने के बाद कंपनियों को निवेश, रोजगार और कर्मचारियों की आय बढ़ाने के मोर्चे पर भी परिणाम दिखाने चाहिए। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में कारोबार करने में आसानी यानी ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के लिए उठाए गए कदमों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि सरकार ने उद्योगों पर कर का बोझ कम किया है और प्रक्रियाओं को सरल बनाने की दिशा में काम किया है। उनका कहना था कि सरकार की नीतियों का उद्देश्य उद्योगों को विस्तार के लिए बेहतर माहौल देना है, लेकिन इसका लाभ केवल कंपनियों के मुनाफे तक सीमित नहीं रहना चाहिए। इससे कर्मचारियों की आय, रोजगार के अवसर और घरेलू मांग में भी बढ़ोतरी होनी चाहिए।

मोदी ने कंपनियों से यह भी कहा कि भारत का बड़ा घरेलू बाजार उनके लिए स्थायी और सुनिश्चित ग्राहक आधार नहीं होना चाहिए। उद्योगों को अपने उत्पादों की गुणवत्ता सुधारनी होगी और अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता विकसित करनी होगी। उन्होंने निर्यात के लिए बेहतर गुणवत्ता वाले उत्पाद और घरेलू बाजार के लिए अलग गुणवत्ता रखने की प्रवृत्ति पर सवाल उठाया। प्रधानमंत्री ने कहा कि देश के उपभोक्ता भी उसी गुणवत्ता के उत्पादों के हकदार हैं, जो कंपनियां विदेशों में बेचती हैं। उन्होंने उद्योगपतियों से भारत के साथ हुए मुक्त व्यापार समझौतों का लाभ उठाने की अपील की।

मोदी ने एल्युमिनियम और इस्पात जैसे क्षेत्रों का भी उल्लेख किया। उनका कहना था कि भारत के पास कच्चे माल और उत्पादन की संभावनाएं होने के बावजूद कुछ विशेष उत्पादों के लिए आयात पर निर्भरता बनी हुई है। कंपनियों को ऐसे क्षेत्रों में निवेश करना चाहिए, ताकि घरेलू जरूरतों को देश में बने उत्पादों से पूरा किया जा सके। इससे न केवल आयात बिल कम होगा, बल्कि रोजगार और औद्योगिक क्षमता का भी विस्तार हो सकता है। कृषि और खाद्य प्रसंस्करण को लेकर भी प्रधानमंत्री ने उद्योग जगत से अधिक सक्रिय भूमिका निभाने की अपील की। उन्होंने कहा उद्योगों को खाद्य प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन और अंतरराष्ट्रीय बाजारों की मांग के अनुरूप उत्पाद तैयार करने में निवेश करना चाहिए। ध्यान रहे रोजगार और वेतन का सवाल केवल राजनीतिक बयानबाजी तक सीमित नहीं है। आर्थिक सर्वेक्षण 2024–25 में उद्धृत आंकड़ों के मुताबिक, 2017–18 से 2023–24 के बीच नियमित वेतन पाने वाले पुरुष श्रमिकों की महंगाई समायोजित औसत मासिक आय में 6.4 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। महिलाओं के मामले में वास्तविक आय में 12.5 प्रतिशत की गिरावट का उल्लेख किया गया। इसी सर्वेक्षण में एक विश्लेषण के हवाले से बताया गया कि वित्त वर्ष 2023–24 में सूचीबद्ध कंपनियों के मुनाफे में 22.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि उनके रोजगार में 1.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। ये आंकड़े रोजगार और वेतन की गुणवत्ता को लेकर जारी बहस को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं। दूसरी ओर, श्रम बाजार के कुछ संकेतकों में सुधार भी दर्ज किया गया है। आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण के अनुसार, 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों का श्रमिक जनसंख्या अनुपात 2017–18 के 46.8 प्रतिशत से बढ़कर 2023–24 में 58.2 प्रतिशत हो गया। इसी अवधि में बेरोजगारी दर 6 प्रतिशत से घटकर 3.2 प्रतिशत दर्ज की गई। हालांकि, रोजगार की संख्या बढ़ने के साथ–साथ उसकी गुणवत्ता, नियमित वेतन, सामाजिक सुरक्षा और औपचारिक रोजगार के अवसरों पर भी सवाल बने हुए हैं।

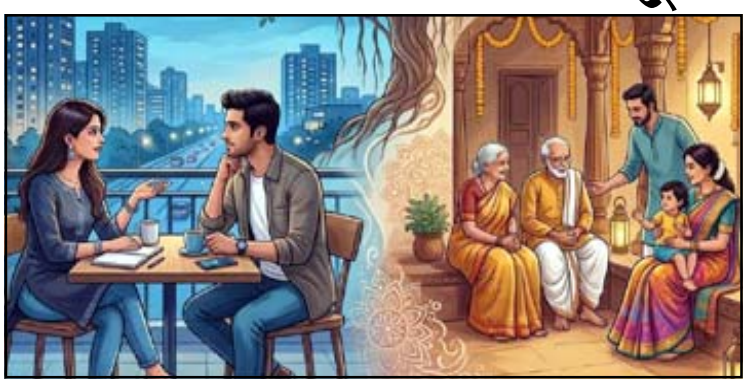
आत्मकथा पर सियासत नई पीढ़ी के रिश्ते और समाज के बदलते मूल्य

युवाओं का आंदोलन ठंडा पड़ गया था और कॉकरोच अपने–अपने घरों में चले गए थे तो सियासत भी ठंडी पड़ गई थी। जब देश में सियासत ठंडी पड़ जाती है तो चारों ओर निराशा छा जाती है। लोगों के चेहरों से मायूसी टपकने लगती है। नेता टाइप लोग हाथ पैर हाथ धर कर बरामदे में बैठ जाते हैं और जमहाईयां लेते रहते हैं। अखबारों में उनके बयान नहीं छपते और अखबारें बासी ब्रेड की तरह लगने लगती हैं। लेकिन इधर फिर से करिश्मा हुआ है। राजनीति की ठंडी पड़ी राख सुलग उठी है क्योंकि मार्केट में आत्मकथा आ गई है।

अब आत्मकथा क्या आई है कि राजनीतिक दलों में आरोप–प्रत्यारोप की जंग शुरू हो गई है। आत्मकथा में जो खुलासे हुए हैं, उन्हें आधार बनाकर, एक दूसरे के कंधे पर पिस्तौल रखकर फायर किए जा रहे हैं। नेताओं को एक नया मुद्दा मिल गया है और निठल्ली बैठी पब्लिक को चर्चा का एक नया विषय मिल गया है। आत्मकथा का बाजार में आना किसी राजनीतिक भूकंप से कम नहीं होता। खासकर तब, जब लेखक कभी सत्ता के गलियारों में रहा हो और उसके पास कुछ ऐसी यादें हों, जिन्हें वह अब तक सीने से लगाए बैठा था। राजनीति में याददाश्त भी बड़ी कमाल की चीज है। सत्ता में रहते हुए जो बातें याद नहीं रहतीं, वे कुर्सी छिनते ही एकदम ताजा हो जाती हैं। आत्मकथा के कुछ पन्ने बाहर आते ही राजनीतिक दलों के प्रवक्ताओं की बांछें खिल जाती हैं।

उन्हें लगता है जैसे बिना मेहनत किए उनके हाथ में तैयार भाषण आ गया हो। प्रेस कॉन्फ्रेंस बुला ली जाती है, माइक सज जाते हैं और किताब के पन्ने ऐसे लहराए जाते हैं जैसे कोई ऐतिहासिक दस्तावेज हाथ लग गया हो। किताब पूरी पढ़ी हो या नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। दो–चार वाक्य हाथ लग जाएं तो कई दिन की राजनीति चल सकती है। दूसरी तरफ जिस पार्टी के खिलाफ खुलासा हुआ होता है, वह भी चुप बैठने वालों में से नहीं होती। पहले किताब को झूठ का पुलिंदा बताया जाता है, फिर लेखक की विश्वसनीयता पर सवाल उठाए जाते हैं। उसके पुराने बयान और पुराने संबंध खंगाले जाते हैं।

आज महानगरों से लेकर छोटे शहरों तक लिव–इन रिलेशनशिप को लेकर चर्चा बढ़ रही है। युवा पीढ़ी का एक वर्ग इसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता और एक–दूसरे को समझने का माध्यम मानता है, जबकि समाज का दूसरा वर्ग इसे भारतीय पारिवारिक व्यवस्था और सांस्कृतिक मूल्यों के लिए चुनौती के रूप में देखता है। लिव–इन रिलेशनशिप के समर्थकों का तर्क है कि विवाह एक बड़ा सामाजिक और भावनात्मक निर्णय है। ऐसे में दो वयस्क यदि बिना विवाह के साथ रहकर एक–दूसरे को समझना चाहते हैं, तो उन्हें अपनी जिंदगी के फैसले लेने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। उनका मानना है कि किसी रिश्ते की मजबूती का आधार केवल विवाह का प्रमाणपत्र नहीं, बल्कि आपसी विश्वास, सम्मान, प्रेम और जिम्मेदारी है। वहीं, भारतीय समाज का एक बड़ा वर्ग मानता है कि विवाह केवल व्यक्तिगत पसंद नहीं, बल्कि सामाजिक और पारिवारिक संस्था भी है। विवाह के माध्यम से परिवार को स्थायित्व मिलता है और बच्चों के पालन–पोषण के लिए एक सामाजिक ढांचा तैयार होता है। ऐसे में लिव–इन संबंधों का बढ़ता चलन पारंपरिक पारिवारिक व्यवस्था के सामने नए सवाल खड़े कर रहा है।



शिक्षा, रोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता ने युवाओं को अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने का आत्मविश्वास दिया है। विशेषकर महानगरों में पढ़ाई और नौकरी के लिए घर से दूर रहने वाले युवा एक–दूसरे के साथ रहना सुविधाजनक समझते हैं। कई लोगों के लिए यह अकेलेपन से बचने और भावनात्मक सहयोग पाने का माध्यम भी है। किसी भी संबंध में भावनात्मक जुड़ाव के साथ जिम्मेदारी, पारदर्शिता और भविष्य के प्रति गंभीरता भी आवश्यक है। यदि संबंधों में प्रतिबद्धता का अभाव हो, तो अलगाव की स्थिति में मानसिक तनाव और भावनात्मक असुरक्षा पैदा हो सकती है। लिव–इन रिलेशनशिप के संदर्भ में महिलाओं की स्थिति एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक प्रश्न है। एक ओर यह व्यवस्था महिलाओं को अपनी पसंद से जीवनसाथी चुनने और स्वतंत्र निर्णय लेने का अवसर देती है, वहीं दूसरी ओर असमान शक्ति–संबंध, आर्थिक निर्भरता और भावनात्मक शोषण जैसी समस्याएं भी सामने आ सकती हैं। हालांकि भारतीय कानून में महिलाओं को कुछ परिस्थितियों में संरक्षण प्रदान किया गया है। यह सुरक्षा हर लिव–इन संबंध पर स्वतः लागू नहीं होती। संबंध की परिस्थितियां और कानूनी शर्तें महत्वपूर्ण होती हैं। इसलिए जरूरी है कि युवा विशेषकर महिलाएं अपने कानूनी अधिकारों, आर्थिक आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत सुरक्षा के प्रति जागरूक रहें।

देवोत्थानी एकादशी व तुलसी विवाह

रमेश सर्राफ

भगवान विष्णु को जगत का पालनकर्ता बताया जाता है। पृथ्वी पर जब–जब अत्याचारी पैदा हुए, भगवान विष्णु ने अनेक प्रकार के अवतार लेकर उनका संहार किया और धर्म की स्थापना हुई। मीन, कमठ, सूकर, नरहरी, वामन, परशुराम, बपुधरी की धार्मिक आख्याएं सभी जानते हैं। ऐसे में भगवान विष्णु चार महीने के लिए योग निद्रा में चले जाते हैं। माना जाता है कि सामान्य निद्रा में सजगता शून्य के बराबर होती है जबकि योग निद्रा में शरीर विश्राम की स्थिति में होता है लेकिन सजगता बनी रहती है। इससे शारीरिक और मानसिक तनाव दूर होता है। साथ ही अनिद्रा, चिंता और पुराने आघातों को दूर करने में मदद मिलती है। भगवान विष्णु आषाढ़ महीने के शुक्ल पक्ष की एकादशी को योग निद्रा में लीन होकर–सजगता से अपने दायित्व का निर्वहन भी करते रहते हैं और कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी को योग निद्रा को त्याग देते हैं। इस बार देवोत्थानी एकादशी 20 एवं 21 नवम्बर को है लेकिन सूर्योदय कालीन एकादशी 21 नवम्बर को होगी। सामान्य गृहस्थ परम्परा के अनुसार 20 नवम्बर शुक्रवार को ही एकादशी का व्रत रखा जाएगा। उसी दिन परम्परा के अनुसार भगवान शालिग्राम से तुलसी का विवाह किया जाएगा।

हिंदू धर्म में कार्तिक मास की



एकादशी तिथि को बेहद शुभ और पुण्यदायी माना जाता है। इस तिथि पर भगवान विष्णु चार महीने की योगनिद्रा से जागते हैं, इसलिए इसे देवउठनी, देवोत्थानी और देवप्रबोधिनी एकादशी के नाम से जाना जाता है। हर साल कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को यह पर्व श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की विशेष पूजा–अर्चना की जाती है। उत्तर भारत के कई क्षेत्रों में देवउठनी एकादशी पर तुलसी विवाह की परंपरा भी निभाई जाती है।मान्यता है कि इसी दिन से मांगलिक कार्यों की शुरुआत हो जाती है। हालांकि इस साल एकादशी की तारीख को लेकर लोगों में असमंजस बना हुआ है। ज्योतिषाचार्य बताते हैं कि कुछ लोग 20 नवंबर, तो कुछ 21 नवंबर को पर्व बता रहे हैं। ऐसे में आइए जानते हैं इसकी सही तिथि, धार्मिक महत्व और पूजा विधि क्या है। वैदिक पंचांग के अनुसार, कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि 20 नवंबर 2026 को सुबह 7 बजकर 15 मिनट पर शुरू होगी। इसका समापन 21 नवंबर को सुबह 6 बजकर 31 मिनट पर होगा। उदयातिथि और सामान्य गृहस्थ परंपरा के अनुसार, देवउठनी एकादशी का मुख्य व्रत 20 नवंबर को रखा जाएगा। वहीं वैष्णव परंपरा में 21 नवंबर को देवउठनी एकादशी का व्रत रखा जाएगा, इसीलिए पंचांग में दोनों तारीखों का उल्लेख मिल रहा है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान विष्णु आषाढ़ महीने के शुक्ल पक्ष की देवशयनी एकादशी से योग निद्रा में चले जाते हैं। इसके बाद वह कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी पर चार महीने बाद जागते हैं। इसी कारण इस तिथि को देवउठनी या देवोत्थानी एकादशी कहा जाता है। भगवान विष्णु के जागने के साथ ही चातुर्मास समाप्त हो जाता है। इस अवधि में विवाह और अन्य मांगलिक कार्यों को टालने की परंपरा रही है। देवउठनी एकादशी के बाद फिर से शादी–विवाह, गृह प्रवेश और अन्य शुभ कार्य शुरू हो जाते हैं। इस दिन सुबह स्नान कर घर के मंदिर की साफ–सफाई करें और भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापित कर विधि–विधान से पूजा करें। उन्हें पीले फूल, फल, तुलसी दल और वस्त्र अर्पित करें। इसके बाद घी का दीपक जलाकर विष्णु सहस्रनाम या मंत्रों का जाप करें। मां लक्ष्मी की आराधना भी करें। शाम को शंख–घंटियां बजाकर भजन–कीर्तन करें। अंत में आरती कर प्रसाद बांटें। अनादिकाल से मनाया जाने वाला यह पवित्र मिलन, देवी तुलसी और भगवान विष्णु के कृष्ण अवतार के बीच का पवित्र वैवाहिक मिलन है। इस जोड़े के प्रति पूरे प्रेम और आशीर्वाद के साथ मनाया जाने वाला यह उत्सव एक पूर्ण हिंदू विवाह की तरह ही मनाया जाता है। हिंदी में विवाह का अर्थ है शादी। तुलसी विवाह तुलसी (पवित्र तुलसी) और भगवान कृष्ण का विवाह समारोह है। यह सभी हिंदुओं के लिए विवाह के मौसम की शुरुआत का प्रतीक है और अन्य हिंदू विवाहों की तरह ही मनाया जाता है, जिसमें दुल्हन (तुलसी का पौधा) के लिए सिंदूर, चूड़ियाँ और साड़ियाँ होती हैं। तुलसी विवाह पूजा में भाग लेने से समृद्धि, सुख और सुखी वैवाहिक जीवन के लिए आशीर्वाद प्राप्त होता है। तुलसी को देवी लक्ष्मी का अवतार माना जाता है और इससे संबंधित अनुष्ठान हिंदू कैलेंडर के कार्तिक महीने में होते हैं।

हिंदू पंचांग के अनुसार, देव उठनी एकादशी के नाम से जाने जाने वाले चंद्र पखवाड़े के ग्यारहवें दिन से विवाह ऋतु की शुरुआत होती है। यह चतुर्मास के चार महीने के उस समय की समाप्ति का प्रतीक है, जब भगवान विष्णु को सोते हुए माना जाता है। तुलसी विवाह हिंदू विवाह की ही तरह मनाया जाता है और इसमें सभी रीति–रिवाजों का पालन किया जाता है।इसकी कथा इस प्रकार है– एक समय जलंधर नाम का एक पराक्रमी असुर हुआ। इसका विवाह वृंदा नामक कन्या से हुआ। वृंदा भगवान विष्णु की परम भक्त थी। इसके पतिव्रत धर्म के कारण जलंधर अजेय हो गया था। इसने एक युद्ध में भगवान शिव को भी पराजित कर दिया। अपने अजेय होने पर इसे अभिमान हो गया और स्वर्ग की कन्याओं को परेशान करने लगा। दुःखी होकर सभी देवता भगवान विष्णु की शरण में गए और जलंधर के आतंक को समाप्त करने की प्रार्थना करने लगे।

सर्दियों में वरदान है आंवला



आयुर्वेद में आंवला को अमृत बताया गया है। सर्दियों में आंवला खाने से कई फायदे मिलते हैं। सुपरफूड से कम नही है आंवला, क्योंकि इसमें कई पोषक तत्व पाए जाते है। पौराणिक मान्यता है कि अमृत मे सभी रस समाहित होते हैं, इसलिए यह अमरता प्रदान करता है। यानी के आंवले में हरड़ में पांच रस होते हैं। इसलिए इसे अमृत के बाद दूसरे स्थान पर रखा गया है। आंवला में विटामिन– सी, ए, कार्बोहाइड्रेट और फाइबर जैसे महत्वपूर्ण पोषक तत्व होते हैं, जो एंटी–एजिंग, एंटीऑक्सीडेंट और एंटी–कार्सिनोजेनिक गुण भी पाए जाते है। इसी वजह से आंवला सेहत के लिए लाभकारी है।

इम्यून सिस्टम मजबूत होता–आंवला में सबसे ज्यादा विटामिन सी का सोर्स पाया जाता है। वहीं, इम्यून फंक्शन के लिए बेहद महत्वपूर्ण न्यूट्रिएंट में से एक है। एक स्टडी के मुताबिक, आंवले में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट हमें ऑक्सिडेटिव स्ट्रेस से बचाते हैं। इसके साथ ही इम्यून सिस्टम भी मजूबत होता है।

डाइजेशन में सुधार–प्रतिदिन आंवला खाने से पेट संबंधित समस्याएं दूर होती है। इसके साथ ही पेट से जुड़ी समस्याओं से भी राहत मिलता है।

हार्ट हेल्थ बेहतर होता है–रोजाना एक आंवला खाने से हार्ट डिजीज के कई जोखिम कम हो सकते हैं। कोलेस्ट्रॉल लेवल, ट्राइग्लिसराइड लेवल और ब्लड प्रेशर कंट्रोल रहता है।

हेयर्स हेल्दी रहते हैं–आंवला हेयर्स फॉलिकल्स को पोषण प्रदान करता है। बालों की जड़ों को मजबूत करने और समय से पहले सफेद होने से रोकने में मदद करता है। इससे बाल हेल्दी, चमकदार और घने दिखने लगते हैं।

डायबिटीज रोगियो के लिए फायदेमंद–जो लोग डायबिटीज से परेशान हैं उन्हें आंवले का सेवन करना चाहिए। आंवला में कुछ ऐसे कंपाउंड्स मौजूद होते हैं जो ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करते हैं, जो डायबिटीज वाले मरीजों के लिए फायदा पहुंचाता है।

आंखों की सेहत के लिए फायदेमंद–बता दें, रोजाना एक आंवला खाने से आंखों की रोशनी तेज होती है। आंवला कैरोटीन से भरपूर होता है। डॉक्टर भी कहते हैं कि रोज आंवला और शहद खाने से आंखों की सेहत के लिए बहुत अच्छा माना जाता है।

wisdom360™
Cultivating Success
(AN IIT/IIM ALUMNI INITIATIVE)
Class V to XII
(CBSE & ICSE)
70072-79710
1/46 Rashmi Khand Sharda Nagar 226002.

5 लाख में शुरू होने वाले छोटे शहरों के धंधे, हर महीने बनाकर देंगे रु. 50 हजार



आज के समय में आर्थिक ग्रोथ का सबसे बड़ा पैमाना खुद का बिजनेस माना जाता है। इसके लिए आपको सही पूंजी में सही बिजनेस मॉडल को अपनाना होगा। अगर आप छोटे शहर में खुद का बिजनेस शुरू करना चाहते हैं लेकिन आइडिया नहीं है तो ये खबर आपके लिए है।

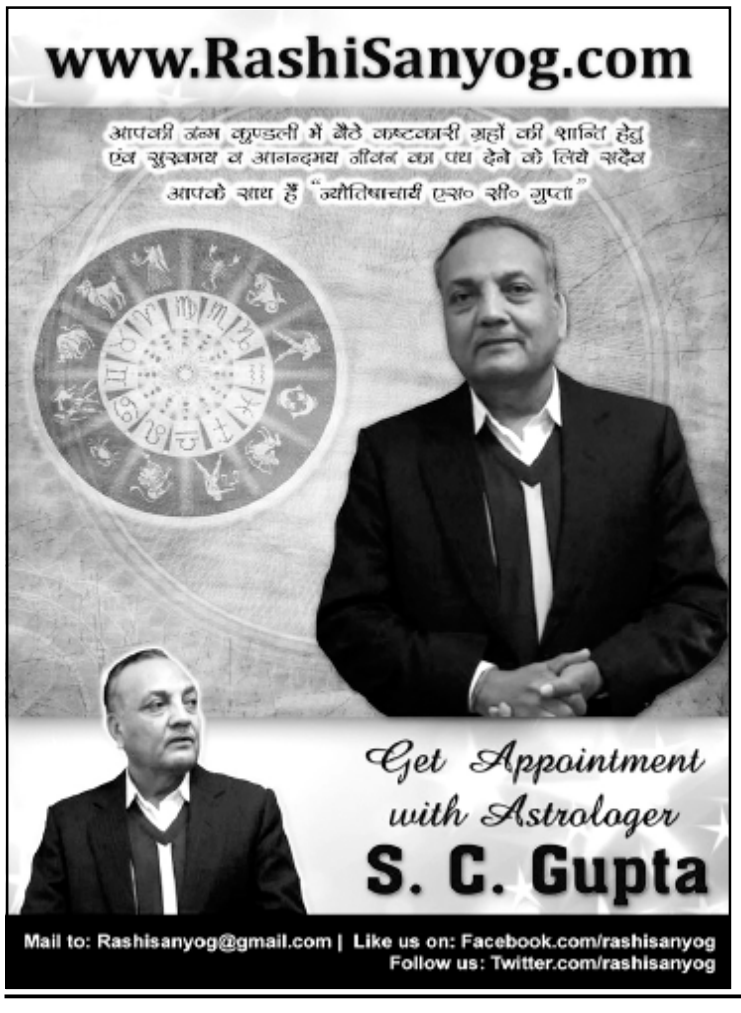
छोटे शहरों में अगर आप रु. 5 लाख के निवेश से खुद का कुछ शुरू करना चाहते हैं तो आइडिया जान लीजिए। रु. 5 लाख के बजट में टेकअवे बेकरी शॉप या क्लाउड बेकरी शुरू करना सबसे अच्छा ऑप्शन है। इसमें बैठने की जगह (क्पदम–पद) का भारी किराया बचता है और आप सीधे वॉक–इन ग्राहकों या ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से ऑर्डर ले सकते हैं। इसमें ध्2 लाख मशीनरी खर्च रु. 1.5 लाख दुकान या इंटीरियर, कच्चा माल और पैकेजिंग से लिए ध्1 लाख और बचे पैसे रिजर्व रखें।

तेजी से विकास कर रहे शहरों के लिए में इलेक्ट्रिकल शॉप और सैनिटरी शॉप बहुत फायदेमंद बिजनेस हैं। इंफ्रास्ट्रक्चर के डेवलप होने से लाइट फिटिंग, प्लांबिंग फिटिंग और प्लास्टिक सामानों की भारी डिमांड होती है।

भारत की अर्थव्यवस्था को मिलेगा सस्ते तेल का फायदा : अनंत नागेश्वरन

मुख्य आर्थिक सलाहकार वी अनंत नागेश्वरन ने कहा कि वित्त वर्ष 2028 में कच्चे तेल की कम कीमतों के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था को भारी लाभ हो सकता है। साथ ही उन्होंने कहा कि पूंजी की भारी आवक से मजबूत रुपये का प्रबंधन चुनौतीपूर्ण हो सकता है।फिक्की की सालाना आम बैठक में बोलते हुए नागेश्वरन ने कहा कि चालू वित्त वर्ष के दौरान बिजली की कीमतों, कच्चे तेल की उपलब्धता, प्राकृतिक गैस और उर्वरकों की उपलब्धता के बारे में बहुत चिंता थी, वहीं आज स्थिति ठीक नजर आ रही है।

उन्होंने कहा, 'हम छह महीने पहले की तुलना में बेहतर स्थिति में कैलेंडर वर्ष के अंत के करीब पहुंच रहे हैं। यदि तेल की कीमतों का पूर्वानुमान और एआई के मूल्यांकन के संकेत को देखें तो 2027–28 वृद्धि और भारत में पूंजी की आवक के मामले में काफी अच्छा वर्ष साबित हो सकता है। दरअसल कौन जानता है कि अगले साल हमारी समस्या रुपये की कमजोरी के बजाय रुपये की मजबूती का प्रबंधन करना हो सकती है।'



इवी का 'ग्रीन' सफर हुआ महंगा, दो साल में ही बढ़ गए 25 फीसदी दाम



पेट्रोल–डीजल के बढ़ते खर्च से राहत और पर्यावरण संरक्षण के लिए इलेक्ट्रिक वाहन (इवी) को जेब के लिहाज से सस्ता विकल्प मानने वाले उपभोक्ताओं का बजट अब बढ़ रहा है। पिछले दो वर्षों में मॉडल और बैटरी क्षमता के अनुसार इलेक्ट्रिक वाहनों की कीमतों में 25 फीसदी तक की बढ़ोतरी हुई है। इसका सबसे ज्यादा असर इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों पर दिखाई दे रहा है। करीब एक लाख रुपए में मिलने वाला इ–स्कूटर अब 1.20 से 1. 25 लाख रुपए तक पहुंच गया है।

इवी की बढ़ती कीमतों के पीछे सबसे बड़ा कारण बैटरी की लागत में इजाफा है। बाजार कारोबारियों के मुताबिक देश की करीब 90 फीसदी इवी कंपनियां बैटरी और उसके प्रमुख कंपोनेंट के लिए चीन पर निर्भर हैं। ऐसे में अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे माल की कीमत, डॉलर के मुकाबले रुपए की स्थिति, शिपिंग खर्च और आपूर्ति शृंखला पर दबाव सीधे वाहनों की कीमत को प्रभावित करता है।

पेट्रोल–डीजल के लगातार बढ़ते खर्च और कम रनिंग कॉस्ट के कारण इलेक्ट्रिक दोपहिया की मांग तेजी से बढ़ रही है। ग्वालियर में हर महीने 1500 से अधिक इलेक्ट्रिक दोपहिया बिक रहे हैं। कई बड़े ब्रांड के लोकप्रिय मॉडलों के लिए ग्राहकों को 20 से 30 दिन तक इंतजार करना पड़ रहा है। इवी कारोबारी हरिओम नागपाल के मुताबिक पिछले चार महीनों में इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग करीब 30 फीसदी बढ़ी है। कंपनियां मांग के अनुपात में उत्पादन नहीं कर पा रही हैं। यही वजह है कि डीलरों के पास स्टॉक पहुंचते ही बुकिंग के आधार पर वाहनों की डिलीवरी की जा रही है। इवी कारोबारी उमेश उप्पल बताते हैं कि इलेक्ट्रिक दोपहिया का चलन 2016–18 के दौरान शुरू हुआ था, लेकिन 2020 के बाद बाजार ने तेजी पकड़ी। पिछले दो वर्षों में ग्राहकों का रुझान और बढ़ा है। उनके अनुसार अंतरराष्ट्रीय तनाव और ईरान–अमेरिका संघर्ष के असर से कच्चे माल, परिवहन और आपूर्ति शृंखला की लागत बढ़ी है, जिसका प्रभाव इवी की कीमतों पर पड़ा है।

एसएएफ का सुविकसित तंत्र जीवाश्म ईंधन की आयात लागत घटाएगा : राममोहन नायडू



केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री के. राममोहन नायडू ने मंगलवार को कहा कि सतत विमानन ईंधन (एसएएफ) का सुविकसित तंत्र भारत को सालाना पांच से सात अरब डॉलर का जीवाश्म ईंधन आयात बिल घटाने में भी मदद कर सकता है। उन्होंने एसएएफ के पर्यावरणीय और आर्थिक लाभ को रेखांकित किया।

राममोहन नायडू ने नई दिल्ली में भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ (फिक्की) की ओर से आयोजित इंडिया सस्टेनेबल एविएशन समिट को संबोधित करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि सतत विमानन ईंधन (एसएएफ) का एक सुविकसित घरेलू तंत्र भारत के सालाना जीवाश्म ईंधन (कच्चे तेल) आयात बिल को पांच से 7 अरब डॉलर तक कम करने में मदद कर सकता है। उन्होंने कहा कि मैं एसएएफ को केवल नियमों के पालन के रूप में नहीं देखता । उन्होंने आगे कहा कि भारत के लिए एसएएफ किसी बाध्यता से कहीं बढ़कर है।

राममोहन नायडू ने कहा कि मैं एसएएफ को भारत के लिए एक ऐसे अवसर के रूप में देखता हूं, जिससे वह सस्टेनेबल एविएशन फ्यूल के उत्पादक,

भारतीय ड्रोन कंपनियों के लिए बड़ा मौका, सरकार के स्वदेशीकरण अभियान से बढ़ेगी मांग?



भारत की ड्रोन कंपनियां पूरी मूल्य श्रृंखला में स्वदेशी क्षमता बढ़ाने के प्रयास कर रही हैं। इसकी वजह यह है कि सरकार स्वदेशीकरण को बढ़ावा दे रही है और उद्योग के दिग्गजों ने भूराजनीतिक अनिश्चितता के बीच विदेशी आपूर्तिकर्ताओं द्वारा महत्त्वपूर्ण घटकों की आपूर्ति बंद किए जाने की चेतावनी दी है। उद्योग संगठन ड्रोन फेडरेशन इंडिया (डीएफआई) के अनुसार 2030–31 तक यह सेक्टर लगभग 11 अरब डॉलर का राजस्व का सृजन करेगा। इसके बावजूद अधिकांश फ्लाइट कंट्रोलर और नेविगेशन मॉड्यूल का आयात करना पड़ता है।

बेंगलूरु टेक समिट में बोलते हुए ड्रोन स्टार्टअप के संस्थापकों ने एक मजबूत घरेलू आपूर्ति श्रृंखला और उद्योग के गहरे जुड़ाव का आह्वान किया। हालांकि उन्होंने कहा कि स्वदेशीकरण की प्रक्रिया में केवल भारत में घटकों के निर्माण के बजाय गुणवत्ता और तकनीकी क्षमताओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

डीएफआई द्वारा हाल ही में जारी एक श्वेत पत्र में फ्लाइट कंट्रोलर, बैटरी सेल और रेयर अर्थ मैग्नेट के लिए भारत की आयात पर निर्भरता पर प्रकाश डाला गया है। इसमें 22 नीतिगत सिफारिशें दी गई हैं। श्वेत पत्र में अनुमान लगाया गया है कि भारतीय ड्रोन में इस्तेमाल होने वाले 80 प्रतिशत से 90 प्रतिशत फ्लाइट कंट्रोलर आयात किए जाते हैं।

MY SPORT CART
LIVE . PLAY . WIN
ONLINE SHOPPING
Customer Care:
+91-9654477772
(10am - 8pm)
www.mysportcart.com

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने जारी की नई कॉन्ट्रैक्ट लिस्ट, बाबर आजम को दो फॉर्मेट का कॉन्ट्रैक्ट, रिजवान बाहर



पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने सीनियर पुरुष टीम के लिए एक नया सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट स्ट्रक्चर घोषित किया है। 30 जून, 2027 तक चलने वाले इस नए सिस्टम में खिलाड़ियों को उनके फॉर्मेट के आधार पर कॉन्ट्रैक्ट दिए गए हैं। इस नए स्ट्रक्चर में कुल 38 खिलाड़ी शामिल हैं, जिनमें से 19 खिलाड़ी 'डेवलपमेंट' कैटेगरी में आते हैं। यह नया सिस्टम पिछले साल की कैटेगरी–आधारित लिस्ट (कैटेगरी बी से डी तक) की जगह लेगा। टेस्ट कप्तान बाबर आजम और पूर्व टी20 कप्तान सलमान आगा इकलौते ऐसे खिलाड़ी हैं जिन्हें टेस्ट और वनडे दोनों फॉर्मेट के कॉन्ट्रैक्ट मिले हैं। वहीं, मोहम्मद अब्बास, अजान अवैस, साजिद खान और सऊद शकील को सिर्फ टेस्ट कॉन्ट्रैक्ट दिया गया है। किसी भी खिलाड़ी को तीनों फॉर्मेट के लिए कॉन्ट्रैक्ट नहीं मिला है।

हाल ही में टेस्ट डेब्यू करने वाले रजाउल्लाह, तैय्यब आरिफ, मोहम्मद ताहा, गाजी गोरी और साकिब खान समेत कई खिलाड़ियों को 'डेवलपमेंट' कॉन्ट्रैक्ट दिए गए हैं। वनडे कप्तान शाहीन शाह अफरीदी को वनडे और टी 20 कॉन्ट्रैक्ट मिला है, जबकि टी20 कप्तान साहिबजादा फरहान को केवल टी20 कॉन्ट्रैक्ट दिया गया है। विकेटकीपर मोहम्मद रिजवान का नाम इस लिस्ट में न होना सबसे चौंकाने वाली बात है। रिजवान हाल ही में मैदान के बाहर कुछ विवादों में घिरे थे और इंग्लैंड दौरे के बीच से ही उन्हें घर वापस भेज दिया गया था। पिछले साल रिजवान के पास कैटेगरी बी का कॉन्ट्रैक्ट था।

रिजवान उन 13 खिलाड़ियों में से एक हैं जो पिछले साल लिस्ट में थे, लेकिन इस बार उन्हें जगह नहीं मिली है। पिछले साल कैटेगरी बी में शामिल रहे सैम अयूब और हसन अली को भी इस बार कॉन्ट्रैक्ट नहीं मिला है, और शान मसूद भी इस लिस्ट से बाहर हैं। अब्दुल्ला शफीक, मोहम्मद हारिस, मोहम्मद नवाज, नोमान अली, हुसैन तलत, खुर्रम शहजाद, खुशदिल शाह, मोहम्मद अब्बास अफरीदी और मोहम्मद वसीम जूनियर बाकी बचे हैं।

नेपाल पर भारत की 306 रन से जीत, लिस्ट–ए इतिहास के 5वें सबसे छोटे स्कोर पर सिमटी टीम



तिलक वर्मा और कुमार कुशाग्र की तूफानी शतकीय पारियों के बाद हर्षित राणा और प्रिंस यादव की घातक गेंदबाजी के दम पर भारत–ए ने एशिया कप राइजिंग स्टार्स 2026 में अपने अभियान का शानदार आगाज किया। शुक्रवार को दोहा में खेले गए मुकाबले में भारतीय टीम ने नेपाल को 306 रनों के विशाल अंतर से करारी शिकस्त दी। इस मुकाबले में नेपाल की टीम महज 26 रनों पर ढेर हो गई, जो लिस्ट–ए क्रिकेट के इतिहास का पांचवां सबसे कम टीम स्कोर है।

टॉस के बाद पहले बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही। टीम ने महज 42 रन के स्कोर पर अपने तीन अहम विकेट गंवा दिए। सलामी बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी और अभिषेक शर्मा बड़ी पारी खेलने में नाकाम रहे। इसके बाद कप्तान तिलक वर्मा और विकेटकीपर बल्लेबाज कुमार कुशाग्र ने मोर्चा संभाला और शानदार शतकीय पारियां खेलकर भारतीय पारी को मजबूती दी। तिलक वर्मा ने 107 रनों की शानदार पारी खेली, जबकि कुमार कुशाग्र ने 117 रन बनाकर टीम को बड़े स्कोर तक पहुंचाने में अहम योगदान दिया। दोनों बल्लेबाजों के बीच शानदार साझेदारी देखने को मिली। वहीं, पारी के अंतिम ओवरों में सूर्यांश शेडगे ने महज 14 गेंदों पर 36 रन की तूफानी पारी खेलकर भारत के स्कोर को और गति दी। इन दमदार पारियों की बदौलत भारत–ए ने निर्धारित 50 ओवर में नौ विकेट के नुकसान पर 332 रन बनाए। इस तरह नेपाल को जीत के लिए 333 रनों का लक्ष्य मिला। 333 रनों के विशाल लक्ष्य का पीछा करने उतरी नेपाल की टीम भारतीय गेंदबाजों के सामने पूरी तरह बेबस नजर आई। भारतीय तेज गेंदबाज प्रिंस यादव और हर्षित राणा ने शुरुआत से ही नेपाली बल्लेबाजों पर दबाव बनाए रखा। दोनों की घातक गेंदबाजी के सामने नेपाल का कोई भी बल्लेबाज टिककर नहीं खेल सका। नेपाल की पूरी टीम महज 11.3 ओवर में 26 रन बनाकर ऑलआउट हो गई।

भोपाल में महिला एशियन चैंपियंस ट्रॉफी में 4–1 से पिटा मलेशिया



महिला एशियन हॉकी चैंपियंस ट्रॉफी 2026 में मेजबान भारतीय टीम ने जीत के साथ अपने अभियान का आगाज किया। भोपाल के बरखेड़ा नाथू स्थित हॉकी स्टेडियम में खचाखच भरे दर्शकों के सामने भारतीय बेटियों ने दमदार प्रदर्शन करते हुए मलेशिया को 4–1 से शिकस्त दी। इससे पहले मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव ने भव्य समारोह और आतिशबाजी के बीच टूर्नामेंट की आधिकारिक शुरुआत की। प्लेयर ऑफ द मैच पूजा साहू रहीं। यह पूजा का डेब्यू मैच था।

भोपाल में महिला एशियन चौंपियंस ट्रॉफी–2026 के उद्घाटन मुकाबले में चीन ने थाईलैंड को 7–0 से हराया। चौथे क्वार्टर में मैच खत्म होने तक चीन ने सात गोल किए, जबकि थाईलैंड की टीम एक भी गोल नहीं कर सकी। वहीं, जापान ने आखिरी मिनट में गोल दागकर दक्षिण कोरिया को 1–0 से हराया। भोपाल में 19 से 28 नवंबर तक चलने वाली चौंपियनशिप में मेजबान भारत सहित छह देशों की टीमें खिताब के लिए मैदान में उतर रही हैं।







रिलीज से पहले मालविका मोहनन ने शुरू किया 'पॉकेट नोवेल' की टीम का खास रोल



त्यागराजन कुमारराजा 2019 में आई अपनी कल्ट क्लासिक फिल्म 'सुपर डीलक्स' के बाद एक बार फिर बड़े पर्दे पर वापसी कर रहे हैं। इस फिल्म को भारतीय सिनेमा की बेहतरीन फिल्मों में से एक माना जाता है और इसकी खूब तारीफ भी हुई थी। त्यागराजन कुमारराजा द्वारा डायरेक्टेड विजय सेतुपति, मालविका मोहनन, राज बी. शेट्टी, और किशोर कुमार जी. स्टारिंग पॉकेट नोवेल, दुनिया भर में पोंगल के खास मौके पर 24 जनवरी 2027 को सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए तैयार है।

तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ और हिंदी जैसी भाषाओं में रिलीज होने जा रही इस फिल्म के साथ विजय सेतुपति संग त्यागराजन कुमारराजा की जोड़ी एक बार फिर साथ आई है, जिसके कारण मूवी लवर्स का उत्साह बढ़ गया है।

फिल्म की स्टार कास्ट पर सिर्फ स्पॉटलाइट रखने के बजाए, पॉकेट नोवेल के मेकर्स ने एक नया बिहाइंड द सीन वीडियो रिलीज किया है, जिसमें फिल्म के क्रू को काम करते हुए देखा जा सकता है। इस रोलआउट की शुरुआत मालविका मोहनन अपने चार्म से भरे अंदाज के साथ करती हैं। शेयर किए गए इस खास वीडियो क्लिप को शूटिंग से जुड़े लोगों, टेक्नीशियंस और यूनिट मेंबर्स को खास तौर से केंद्र में रखकर बनाया गया है। इससे इस बात का एहसास दिल को छू जाता है कि एक फिल्म को सिल्वर स्क्रीन पर दिखाने के लिए कितने लोगों की कड़ी मेहनत लगती है।

यह वही लोग हैं जो फ्रेम के पीछे खड़े होकर अपना किरदार निभाते हैं। आर्ट, लाइटिंग से लेकर साउंड, मेकअप, कारपेंटर, सेट असिस्टेंस, प्रोडक्शन और ड्राइविंग यूनिट तक, वीडियो इन सभी की मस्ती से भारी झलक दिखाता है, जिनकी वजह से शूटिंग हमेशा चलती रहती है।

फिल्म डियर जिंदगी के एक दृश्य में बिना ग्लिसरीन रो पड़ीं आलिया भट्ट



आलिया भट्ट हिंदी सिनेमा की टॉप स्टार्स में से एक हैं। उन्होंने अपने करियर में अलग–अलग तरह की फिल्में की और अपनी परफॉर्मेंस से साबित किया है कि उनमें वो बात है जो उन्हें आज इस मुकाम पर पहुंचाती है। अपनी करियर चॉइसेस के बारे में बात करते हुए आलिया भट्ट ने बताया कि उनकी जिंदगी का अब तक का वो किरदार कौनसा था जिसने उन्हें वाकई तोड़ कर रख दिया और आंख से आंसू निकालने के लिए उन्हें ग्लिसरीन तक का इस्तेमाल नहीं करना पड़ा। उनकी आंख से यूं ही झर झर आंसू बहने लगे। आलिया ने कहा, डियर जिंदगी में एक सीन था जिसमें वह अपने बचपन के बारे में बात करती है। आलिया कहती हैं सच तो ये है कि हम उसे अपने पास रख ही नहीं सकते। जब मैंने ये सीन परफॉर्म किया तो मैं वाकई टूट गई थी। मुझे इस किरदार में इमोशन लाने के लिए ग्लिसरीन नहीं लेनी पड़ी। ये सीन वन टेक में हो गया था। ऐसा लगा इस सीन ने मेरे अंदर किसी किसी चीज को कैद से आजाद कर दिया। क्योंकि मुझे लगता है कि हर किसी के अंदर उनके बचपन से जुड़ा कुछ ऐसा जरूर होता है जो उनके बड़े हो जाने तक रहता है।आलिया ने कहा, लोगों को नहीं पता चलता कि उनके हर फैसले, हर बर्ताव, अहसास और हर एक मूव पर उसका असर होता है। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि जैसे कि मैंने कुछ ऐसा दोबाया जिया है जिसने मुझे हल्का महसूस करवाने में मदद की।

फिल्मों की टक्कर पर सलमान ने श्रद्धा से मांगी माफी



सलमान खान की आने वाली वॉर ड्रामा फिल्म मातृभूमि मे वॉर रेस्ट इन पीस का बॉक्स ऑफिस पर श्रद्धा कपूर की फिल्म ईठा से क्लैश होने वाला है। दोनों फिल्में 4 दिसंबर 2026 को रिलीज होने जा रही हैं। हाल ही में सलमान ने खुलासा किया कि जब उनकी फिल्म की रिलीज डेट अनाउंस हुई थी, तब उन्हें पता नहीं था कि श्रद्धा की फिल्म भी उसी दिन आ रही है। सलमान ने माना कि उन्हें इस क्लैश का अफसोस है और उन्होंने इसके लिए श्रद्धा कपूर को फोन कर माफी भी मांगी। साथ ही उन्होंने दर्शकों से श्रद्धा की फिल्म ईठा देखने की अपील भी की।

सलमान ने कहा कि अगर उन्हें पहले से पता होता कि श्रद्धा की फिल्म भी 4 दिसंबर को रिलीज हो रही है, तो वह अपनी फिल्म उसी दिन रिलीज नहीं करते। सलमान ने कहा, जब हमने 4 दिसंबर की रिलीज डेट अनाउंस की, तो मुझे नहीं पता था कि श्रद्धा की फिल्म भी 4 दिसंबर को आ रही हैं। मुझे इस बात का बहुत बुरा लग रहा है। अगर मुझे पहले पता होता, तो मैं श्रद्धा के साथ अपनी फिल्म रिलीज नहीं करता।

सलमान ने ये भी बताया कि उन्होंने श्रद्धा को खुद फोन करके माफी मांगी। सलमान ने कहा, मैंने उनसे बात की। मैंने उन्हें फोन किया। मैंने उन्हें बचपन से बड़ा होते देखा है। मैंने उनसे कहा, मुझे माफ कर दो, मुझे नहीं पता था। इस पर श्रद्धा ने सलमान को भरोसा दिलाया कि बॉक्स ऑफिस पर दोनों फिल्मों के लिए पर्याप्त जगह है। सलमान के मुताबिक, श्रद्धा ने उनसे कहा, नहीं सर, हमारी दोनों फिल्मों के लिए काफी जगह है। इस पर सलमान ने जवाब दिया, बहुत बढ़िया, यह सुनकर मुझे खुशी हुई। सलमान ने श्रद्धा की फिल्म को अपना सपोर्ट भी दिया और लोगों से फिल्म देखने की अपील की। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि सभी लोगों को वो फिल्म जरूर देखनी चाहिए। उन्होंने स्टेज पर श्रद्धा और उनकी फिल्म ईठा के लिए एक्साइटमेंट भी दिखाया और दर्शकों को उन्हें सपोर्ट करने को कहा।

अपूर्व लाखिया के निर्देशन में बनी ये वॉर फिल्म उन सैनिकों की कहानी दिखाती है जो कठिन युद्ध परिस्थितियों में देश की रक्षा करते हैं। मातृभूमि मे वॉर रेस्ट इन पीस में सैन्य कार्रवाई के साथ इमोशनल एंगल को भी दिखाया गया है। फिल्म युद्ध के दौरान सैनिकों की निजी और नौकरी करते वक्त आने वाली परेशानियों और चुनौतियों को सामने लाती है।

मणि भट्टाचार्य की भोजपुरी फिल्म रक्षा करिहा कुलदेवी माई अब आनलाइन पर भी उपलब्ध



भोजपुरी फिल्म रक्षा करिहा कुलदेवी माई का वर्ल्ड डिजिटल प्रीमियर हो गया है। फिल्म को फोक म्यूजिक भोजपुरी के आधिकारिक यूट्यूब चैनल पर रिलीज किया गया है। अब भोजपुरी दर्शक इस फिल्म को घर बैठे ऑनलाइन देख सकते हैं। सुर म्यूजिक वर्ल्ड प्राइवेट लिमिटेड प्रस्तुत इस फिल्म के निर्माता सुरिंदर यादव हैं। फिल्म की कहानी लोक आस्था, पारिवारिक रिश्तों, संस्कारों और कुलदेवी के प्रति श्रद्धा के इर्द–गिर्द बुनी गई है। फिल्म के जरिए भोजपुरी दर्शकों को अपनी संस्कृति और परंपराओं से जुड़ा संदेश देने की कोशिश की गई है।भोजपुरी फिल्म रक्षा करिहा कुलदेवी माई के निर्माता सुरिंदर यादव के मुताबिक, 'रक्षा करिहा कुलदेवी माई' लोक आस्था और पारिवारिक संस्कारों से जुड़ी कहानी है।

समांथा रुथ प्रभु के घर आया चांद का टुकड़ा



एक्ट्रेस समांथा रुथ प्रभु और उनके पति फिल्म मेकर राज निदिमोरु पेरेंट्स बन गए हैं। इस कपल ने 19 नवंबर, 2026 को अपने पहले बच्चे का स्वागत किया। उनके घर एक बेटे के आने की खुशी इस वक्त सोशल मीडिया पर छाई हुई। कपल ने एक पोस्ट के जरिए खुश खबरी शेयर की। बच्चा 19 नवंबर को पैदा हुआ। उन्होंने एक दिन बाद यानी कि 20 नवंबर को सोशल मीडिया पर अपने फैन्स के साथ यह खुशी की खबर शेयर की। समांथा ने अपने नवजात बच्चे की एक बेहद प्यारी झलक दिखाते हुए उसके आने की अनाउंसमेंट की। फोटो में नए नए मम्मी–पापा अपने बेटे की नन्हीं उंगलियों को अपनी उंगलियों से थामे हुए दिखाई दे रहे हैं, जो एक परिवार के तौर पर उनके जीवन के इस नए चैप्टर की एक बहुत ही सुंदर झलक पेश करता है। इस पोस्ट के सामने आते ही सोशल मीडिया पर बधाइयों का तांता लग गया। समांथा रुथ प्रभु और राज निदिमोरु के फैंस के साथ–साथ इंडस्ट्री के तमाम बड़े कलाकारों ने भी इस जोड़े को माता–पिता बनने पर ढेर सारी शुभकामनाएं दीं। अभिनेत्री तमन्ना भाटिया, हंसिका मोटवानी, संजना गणेशन, अथिया शेट्टी, रकुल प्रीत सिंह, कृति खरबंदा, निमृत कौर और अभिनेता वरुण धवन समेत कई कलाकारों ने कमेंट सेक्शन में बधाई दी।

प्रधान संपादक
रूचिर सिंह सिसौदिया
स्थानीय संपादक
सुधीर निगम

कार्पोरेट कार्यालय–
सेक्टर–सी0–1, सी0–25,
एल0डी0ए0 कालोनी,
कानपुर रोड, लखनऊ
उ0प्र0–226012

टी.आई.एल. एक्सप्रेस
स्वामी एवं प्रकाशक रूचिर सिंह सिसौदिया द्वारा न्यू अनुग्राफिक्स, पार्क रोड लखनऊ से मुद्रित एवं 279 कटरा बांदा से प्रकाशित
फोन नं0–0522–4010844

Mail us-
tvindialive.til@gmail.com
Log on- tvindialive.in,
tvindialive.com,
www.facebook.com/
tvindialive/
https://www.youtube.com@tvindialivedigi

